अध्याय २

छोटे हरिदास को दण्ड

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत प्रवाह भाष्य* में इस अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है : श्री चैतन्य चरितामृत के लेखक कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु से प्रत्यक्ष भेंटों, उनके द्वारा शक्त्याविष्ट लोगों से भेंटों तथा उनके आविर्भाव की व्याख्या करनी चाही। इस तरह उन्होंने नृसिंहानन्द तथा अन्य भक्तों की महिमाओं का वर्णन किया। एक भक्त भगवान् आचार्य श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में अत्यधिक श्रद्धा रखता था। तो भी उसके भाई गोपाल भट्ट आचार्य ने मायावाद भाष्य पर व्याख्यान दिये। श्री चैतन्य महाप्रभु के सचिव श्रील स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने भगवान् आचार्य को वह भाष्य सुनने से मना किया। बाद में जब भगवान् आचार्य के आदेश पर छोटा हरिदास माधवी देवी से भिक्षा माँगने गया, तो उसने संन्यासी होते हुए भी एक स्त्री से घुल-मिलकर बातें करने का अपराध किया। इसके कारण श्री चैतन्य महाप्रभु ने छोटे हरिदास का बहिष्कार किया और अपने बड़े से बड़े भक्तों के अनुरोध के बावजूद भी महाप्रभु ने उसे फिर से स्वीकार नहीं किया। इस घटना के एक वर्ष बाद छोटे हरिदास ने गंगा-यमुना के संगम में जाकर आत्महत्या कर ली। किन्तु वह अपने आध्यात्मिक देह में भक्ति-गीत गाता रहा और श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें सुना। जब बंगाल के वैष्णवजन श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने आये, तो यह घटना स्वरूप दामोदर तथा अन्यों को ज्ञात हुई।

वन्देऽहं श्री-गुरोः श्री-युत-पद-कमलं श्री-गुरून्वैष्णवांश्च
श्री-रूपं साग्रजातं सह-गण-रघुनाथान्वितं तं स-जीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजन-सहितं कृष्ण-चैतन्य-देवं
श्री-राधा-कृष्ण-पादान्सह-गण-ललिता-श्री-विशाखान्वितांश्च ॥ १ ॥

वन्देऽहं श्री-गुरोः श्री-युत-पद-कमलं श्री-गुरून्वैष्णवांश्च
श्री-रूपं साग्रजातं सह-गण-रघुनाथान्वितं तं स-जीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजन-सहितं कृष्ण-चैतन्य-देवं
श्री-राधा-कृष्ण-पादान्सह-गण-ललिता-श्री-विशाखान्वितांश्च ॥ १ ॥

वन्दे—सादर प्रणाम करता हूँ; **अहम्**—मैं; **श्री-गुरोः**—अपने दीक्षा गुरु एवं शिक्षा गुरु के; **श्री-युत-पद-कमलम्**—सौभाग्य से युक्त चरणकमलों को; **श्री-गुरून्**—गुरु परम्परा में, श्रील माधवेन्द्रपुरी से प्रारम्भ कर श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद तक सभी आध्यात्मिक गुरुजनों को; **वैष्णवान्**—सृष्टि के प्रारम्भ से ही आनेवाले, ब्रह्माजी से आरम्भ कर अन्य सभी वैष्णवों को; **च**—तथा; **श्री-रूपम्**—श्रील रूप गोस्वामी को; **स-अग्र-जातम्**—उनके बड़े भाई, सनातन गोस्वामी सहित; **सह-गण-रघुनाथ-अन्वितम्**—रघुनाथ दास गोस्वामी और उनके परिकरों के साथ; **तम्**—उनको; **स-जीवम्**—जीव गोस्वामी सहित; **स-अद्वैतम्**—अद्वैत आचार्य सहित; **स-अवधूतम्**—नित्यानन्द प्रभु के साथ; **परिजन-सहितम्**—तथा श्रीनिवास ठाकुर एवं अन्य सभी भक्तों से साथ; **कृष्ण-चैतन्य-देवम्**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु को; **श्री-राधा-कृष्ण-पादान्**—सर्वशुभ श्रीकृष्ण एवं श्रीमती राधारानी के चरणकमलों को; **सह-गण**—संगीगणों के साथ; **ललिता-श्री-विशाखा-अन्वितान्**—श्री ललिता और श्री विशाखा के संग में; **च**—और।

अनुवाद

मैं अपने गुरु तथा भक्ति-मार्ग के अन्य सारे उपदेशकों के चरणकमलों में सादर नमस्कार करता हूँ। मैं सारे वैष्णवों को तथा श्रील रूप गोस्वामी, श्रील सनातन गोस्वामी, रघुनाथ दास गोस्वामी, जीव गोस्वामी तथा उनके साथियों समेत छहो गोस्वामियों को सादर नमस्कार करता हूँ। मैं श्री अद्वैत आचार्य प्रभु, श्री नित्यानन्द प्रभु, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा श्रीवास ठाकुर आदि उनके सारे भक्तों को सादर नमस्कार करता हूँ। तत्पश्चात् मैं भगवान् श्रीकृष्ण, श्रीमती राधारानी तथा ललिता, विशाखा आदि समस्त गोपियों को सादर नमस्कार करता हूँ।

জয় জয় শ্রী-চৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।
জয়াদ্বৈত-চন্দ্র জয় গৌর-ভক্ত-বৃন্দ ॥২॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय हो; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की जय हो; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो! तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

সর্ব-লোক উদ্ধারিতে গৌর-অবতার ।
নিস্তারের হেতু তার ত্রিবিধ প্রকার ॥৩॥

सर्व-लोक उद्धारिते गौर-अवतार ।
निस्तारेर हेतु तार त्रिविध प्रकार ॥ ३॥

सर्व-लोक—सभी लोकों का; **उद्धारिते**—उद्धार करने के लिए; **गौर-अवतार**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु का अवतार; **निस्तारेर हेतु**—सभी लोगों के उद्धार के कारण; **तार**—उनका; **त्रि-विध प्रकार**—तीन प्रकार का है।

अनुवाद

अपने श्री चैतन्य महाप्रभु के अवतार में भगवान् श्रीकृष्ण तीनों लोक के—ब्रह्मलोक से लेकर पाताललोक तक के सारे जीवों का उद्धार करने के लिए अवतरित हुए। उन्होंने तीन प्रकार से उनका उद्धार किया।

সাক্ষাদ্দর্শন, আর যোগ্য-ভক্ত-জীবে ।
'আবেশ' করয়ে কাহাঁ, কাহাঁ 'আবির্ভাবে' ॥৪॥

साक्षात्दर्शन, आर योग्य-भक्त-जीवे ।
'आवेश' करये काहाँ, काहाँ 'आविर्भावे' ॥ ४॥

साक्षात्-दर्शन—प्रत्यक्ष मिलकर; **आर**—तथा; **प्रोग्य-भक्त**—शुद्ध भक्त; **जीवे**—जीवात्माओं को; **आवेश करये**—विशिष्ट आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा समर्थ बनाकर; **काहाँ**—कहीं कहीं; **काहाँ**—कहीं अन्य; **आविर्भावे**—स्वयं प्रकट होकर।

अनुवाद

महाप्रभु ने कुछ स्थानों पर पतितात्माओं से प्रत्यक्ष मिलकर, अन्य स्थानों पर किसी शुद्ध भक्त में शक्ति संचार करके तथा और स्थानों पर उनके समक्ष प्रकट होकर उनका उद्धार किया।

'साक्षाज्जर्शने' प्राय़ सब निस्तारिला ।
नकुल-ब्रह्मचारीर देहे 'आविष्ट' हइला ॥ ५॥
प्रद्युम्न-नृसिंहानन्द आगे कैला 'आविर्भाव' ।
'लोक निस्तारिब',—एइ ईश्वर-स्वभाव ॥ ६॥

'साक्षात्दर्शने' प्राय सब निस्तारिला ।
नकुल-ब्रह्मचारीर देहे 'आविष्ट' हइला ॥ ५॥
प्रद्युम्न-नृसिंहानन्द आगे कैला 'आविर्भाव' ।
'लोक निस्तारिब',—एइ ईश्वर-स्वभाव ॥ ६॥

साक्षात्-दर्शने—प्रत्यक्ष मिलकर; **प्राय**—लगभग; **सब**—सभी का; **निस्तारिला**—उद्धार किया; **नकुल-ब्रह्मचारीर**—नकुल नामक ब्रह्मचारी की; **देहे**—देह में; **आविष्ट हइला**—प्रवेश किये; **प्रद्युम्न-नृसिंहानन्द**—प्रद्युम्न नृसिंहानन्द; **आगे**—के समक्ष; **कैला**—किये; **आविर्भाव**—प्रकट; **लोक निस्तारिब**—मैं सभी पतित जीवों का उद्धार करूँगा; **एइ**—यह; **ईश्वर-स्वभाव**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का स्वभाव (है)।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्रायः समस्त पतितात्माओं का उद्धार उनसे प्रत्यक्ष भेंट करके किया। उन्होंने नकुल ब्रह्मचारी जैसे महान् भक्तों के शरीर में प्रवेश करके तथा नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी जैसों के समक्ष प्रकट होकर अन्यों का उद्धार किया। "मैं पतितात्माओं का उद्धार करूँगा"—यह कथन पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के स्वभाव का सूचक है।

तात्पर्य

महाप्रभु ने निम्नांकित चार स्थानों पर सदा *आविर्भाव* रूप प्रकट किया—

(१) श्रीमती शचीमाता के घर में, (२) जहाँ-जहाँ नित्यानन्द प्रभु भावावेश में नाचते थे, वहाँ पर, (३) श्रीवास के घर में (जब कीर्तन होता था) तथा (४) राघव पण्डित के घर में। श्री चैतन्य महाप्रभु इन चार स्थानों में स्वयं प्रकट हुए (इस सन्दर्भ में देखें श्लोक ३४)।

সাক্ষাদ্দর্শনে সব জগত্তারিলা ।
এক-বার যে দেখিলা, সে কৃতার্থ হইলা ॥৭॥

साक्षात्दर्शने सब जगत् तारिला ।
एक-बार ये देखिला, से कृतार्थ हइला ॥७॥

साक्षात्-दर्शने—प्रत्यक्ष मिलन द्वारा; **सब**—समस्त; **जगत्**—संसार; **तारिला**—उन्होंने उद्धार किया; **एक-बार**—एक बार; **ये**—जो कोई भी; **देखिला**—देखा; **से**—वह; **कृत-अर्थ**—पूर्णतया सन्तुष्ट; **हइला**—हो गया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु साक्षात् विद्यमान थे, तब संसार का जो भी व्यक्ति उनसे एक बार भी मिलता था, वह पूर्णतया सन्तुष्ट हो जाता था और आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत बन जाता था।

গৌড়-দেশের ভক্ত-গণ প্রত্যব্দ আসিয়া ।
পুনঃ গৌড়-দেশে যায় প্রভুরে মিলিয়া ॥৮॥

गौड़-देशेर भक्त-गण प्रत्यब्द आसिया ।
पुनः गौड़-देशे याय प्रभुरे मिलिया ॥८॥

गौड़-देशेर—बंगाल के; **भक्त-गण**—भक्त; **प्रति-अब्द**—प्रतिवर्ष; **आसिया**—आकर; **पुनः**—फिर; **गौड़-देशे**—बंगाल; **याय**—वापस जाते; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **मिलिया**—मिलने के बाद।

अनुवाद

प्रतिवर्ष भक्तगण श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने के लिए बंगाल से जगन्नाथ पुरी जाया करते थे और उनसे मिलने के बाद वे बंगाल लौट जाते थे।

আর নানা-দেশের লোক আসি' জগন্নাথ ।
চৈতন্য-চরণ দেখি' হইল কৃতার্থ ॥৯॥

আর নানা-দেশের লোক আসি' জগন্নাথ ।
চৈতন্য-চরণ দেখি' হইল কৃতার্থ ॥ ৯ ॥

আর—फिर; **नाना-देशेर**—भिन्न भिन्न प्रान्तों के; **लोक**—लोग; **आसि'**—आकर; **जगन्नाथ**—जगन्नाथ पुरी में; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल; **देखि'**—देखकर; **हइल**—हो गये; **कृत-अर्थ**—पूर्णतया सन्तुष्ट।

अनुवाद

इसी तरह भारत के विभिन्न प्रान्तों से जो लोग जगन्नाथ पुरी जाते, वे श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों का दर्शन करके पूर्णतया सन्तुष्ट हो जाते।

सप्त-द्वीपेर लोक आर नव-खण्ड-वासी ।
देव, गन्धर्व, किन्नर मनुष्य-वेशे आसि' ॥१०॥

सप्त-द्वीपेर लोक आर नव-खण्ड-वासी ।
देव, गन्धर्व, किन्नर मनुष्य-वेशे आसि' ॥ १० ॥

सप्त-द्वीपेर लोक—ब्रह्माण्ड के समस्त सात द्वीपों के लोग; **आर**—तथा; **नव-खण्ड-वासी**—नौ खण्डों के निवासी; **देव**—देवतागण; **गन्धर्व**—गन्धर्व लोक के निवासी; **किन्नर**—किन्नर लोक के निवासी; **मनुष्य-वेशे**—मनुष्य के रूप में; **आसि'**—आते थे।

अनुवाद

ब्रह्माण्ड-भर से, जिसमें सातों द्वीप, नवों खण्ड, देव-लोक, गन्धर्व लोक तथा किन्नर लोक सम्मिलित हैं, लोग मनुष्यों के रूप में वहाँ जाते।

तात्पर्य

सप्तद्वीप की व्याख्या के लिए देखें मध्य-लीला (२०.२१८) तथा *श्रीमद्भागवत* (५.१६ तथा ५.२०)। *सिद्धान्त शिरोमणि* के अध्याय एक (*गोलाध्याय*) तथा *भुवन कोश* में नौ खण्डों का वर्णन इस प्रकार हुआ है :

ऐन्द्रं कशेरु सकलं किल ताम्रपर्णम्
अन्यद् गभस्तिमदतश्च कुमारिकाख्यम्।

नागं च सौम्यम् इह वारुणम् अन्त्यखण्डं
गान्धर्वसंज्ञमिति भारतवर्षमध्ये॥

"भारत-वर्ष के अन्तर्गत नौ खण्ड हैं। ये हैं (१) ऐन्द्र, (२) कशेरु, (३) ताम्रपर्ण, (४) गभस्तिमत्, (५) कुमारिका, (६) नाग, (७) सौम्य, (८) वारुण तथा (९) गान्धर्व।"

প্রভুরে দেখিয়া যায় 'বৈষ্ণব' হঞা ।
কৃষ্ণ বলি' নাচে সব প্রেমাবিষ্ট হঞা ॥১১॥

प्रभुरे देखिया ग्राय 'वैष्णव' हञा ।
कृष्ण बलि' नाचे सब प्रेमाविष्ट हञा ॥ ११ ॥

प्रभुरे देखिया—महाप्रभु को देखकर; **ग्राय**—वे लौट गये; **वैष्णव हञा**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण के भक्त बनकर; **कृष्ण बलि'**—'कृष्ण' उच्चारण करते; **नाचे**—नाचते; **सब**—वे सब; **प्रेम-आविष्ट हञा**—प्रेमभाव में आविष्ट होकर।

अनुवाद

वे सभी महाप्रभु के दर्शन पाकर वैष्णव बन गये। इस तरह भगवत्प्रेम में उन लोगों ने हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन किया और नृत्य किया।

এই-মত দর্শনে ত্রিজগত্নিস্তারি ।
যে কেহ আসিতে নারে অনেক সংসারী ॥১২॥

एइ-मत दर्शने त्रिजगत् निस्तारि ।
ग्रे केह आसिते नारे अनेक संसारी ॥ १२ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **दर्शने**—साक्षात् दर्शन द्वारा; **त्रि-जगत्**—तीनों लोक; **निस्तारि**—उद्धार; **ग्रे केह**—जो कोई; **आसिते नारे**—नहीं आ सके; **अनेक**—अनेक; **संसारी**—भौतिक जगत् में व्यस्त लोग।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्रत्यक्ष भेंट करके तीनों लोकों का उद्धार किया। किन्तु कुछ लोग नहीं जा सके क्योंकि वे भौतिक कार्यकलापों में फँसे हुए थे।

তা-সবা তারিতে প্রভু সেই সব দেশে ।
যোগ্য-ভক্ত জীব-দেহে করেন 'আবেশে' ॥ ১৩ ॥

তা-সবা তারিতে প্রভু সেই সব দেশে ।
যোগ্য-ভক্ত জীব-দেহে করেন 'আবেশে' ॥ ১৩ ॥

তা-সবা—उन सभी का; **তারিতে**—उद्धार करने के लिए; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **সেই**—उन; **সব**—सभी; **দেশে**—देशों में; **যোগ্য-ভক্ত**—एक योग्य भक्त; **জীব-দেহে**—ऐसे जीव की देह में; **করেন**—करते हैं; **আবেশে**—प्रवेश।

अनुवाद

ब्रह्माण्ड के उन भागों के लोगों का उद्धार करने के लिए, जो उनसे भेंट नहीं कर पाये, श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्वयं शुद्ध भक्तों के शरीर में प्रवेश किया।

সেই জীবে নিজ-ভক্তি করেন প্রকাশে ।
তাহার দর্শনে 'বৈষ্ণব' হয় সর্ব-দেশে ॥ ১৪ ॥

সেই জীবে নিজ-ভক্তি করেন প্রকাশে ।
তাহার দর্শনে 'বৈষ্ণব' হয় সর্ব-দেশে ॥ ১৪ ॥

সেই জীবে—उस जीव में; **নিজ-ভক্তি**—स्वयं अपनी ही भक्ति; **করেন প্রকাশে**—सीधे ही प्रकट करते हैं; **তাহার দর্শনে**—ऐसे कृपाप्राप्त भक्त को देखकर; **বৈষ্ণব**—कृष्ण के भक्त; **হয়**—हो गये; **সর্ব-দেশে**—अन्य सभी देशों में।

अनुवाद

इस तरह उन्होंने जीवों (अपने शुद्ध भक्तों) में अपनी इतनी भक्ति प्रकट करके उन्हें आविष्ट कर दिया कि अन्य सारे देशों के लोग उन्हें देखकर भक्त बन गये।

तात्पर्य

चैतन्य-चरितामृत (*अन्त्य* ७.११) में ही कहा गया है :

कलि-कालेर धर्म—कृष्ण-नाम-सङ्कीर्तन।
कृष्ण-शक्ति विना नहे तार प्रवर्तन॥

जब तक कोई व्यक्ति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा शक्ति प्राप्त नहीं करता, तब तक वह विश्वभर में हरे कृष्ण महामन्त्र के पवित्र नामों

का विस्तार नहीं कर सकता। जो व्यक्ति ऐसा करते हैं, वे शक्त्याविष्ट हैं। इसलिए वे कभी-कभी *आवेश अवतार* कहलाते हैं, क्योंकि उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु से शक्ति मिली रहती है।

এই-মত আবেশে তারিল ত্রিভুবন ।
গৌড়ে যৈছে আবেশ, করি দিগ্দরশন ॥ ১৫ ॥

এइ-মত আবেশে তারিল ত্রিভুবন ।
গৌড়ে য়ৈছে আবেশ, করি দিগ্দরশন ॥ ১৫ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **आवेशे**—शक्ति प्रदान करके; **तारिल त्रि-भुवन**—तीनों लोकों का उद्धार किया; **गौड़े**—बंगाल में; **य़ैछे**—कैसे; **आवेश**—शक्ति प्रदान की; **करि दिक्-दरशन**—मैं संक्षेप में वर्णन करूँगा।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने न केवल अपनी निजी उपस्थिति से, अपितु अन्यों को शक्त्याविष्ट करके भी तीनों लोकों का उद्धार किया। मैं संक्षेप में वर्णन करूँगा कि किस तरह उन्होंने बंगाल में एक जीव को शक्त्याविष्ट किया।

আম্বুয়া-মুলুকে হয় নকুল-ব্রহ্মচারী ।
পরম-বৈষ্ণব তেঁহো বড় অধিকারী ॥ ১৬ ॥

আম্বুয়া-মুলুকে হয় নকুল-ব্রহ্মচারী ।
পরম-বৈষ্ণব তেঁহো বড় অধিকারী ॥ ১৬ ॥

आम्बुया-मुलुके—आम्बुया नामक प्रदेश में; **हय**—हैं; **नकुल-ब्रह्मचारी**—नकुल ब्रह्मचारी नामक व्यक्ति; **परम-वैष्णव**—पूर्णतया शुद्ध भक्त; **तेंहो**—वे; **बड़ अधिकारी**—प्रेममयी सेवा (भक्ति) में अत्यन्त उन्नत।

अनुवाद

आम्बुया प्रान्त में नकुल ब्रह्मचारी नाम के एक व्यक्ति थे, जो पूर्णतया शुद्ध भक्त थे और भक्ति में अत्यन्त उन्नत थे।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कहते हैं कि आम्बुया-मुलुक वर्तमान अम्बिका

नगर है, जो पश्चिमी बंगाल के वर्धमान जिले में है। पहले मुसलमान-शासन में यह आम्बुया मुलुक कहलाता था। इस नगर के पड़ोस में प्यारीगंज है, जहाँ नकुल ब्रह्मचारी रहते थे।

गौड़-देशेर लोक निस्तारिते मन हैल ।
नकुल-हृदये प्रभु 'आवेश' करिल ॥ १७॥

गौड़-देशेर लोक निस्तारिते मन हैल ।
नकुल-हृदये प्रभु 'आवेश' करिल ॥ १७॥

गौड़-देशेर लोक—बंगाल के लोगों का; **निस्तारिते**—उद्धार करने की; **मन हैल**—इच्छा हुई; **नकुल-हृदये**—नकुल ब्रह्मचारी के हृदय में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आवेश करिल**—प्रवेश कर गए।

अनुवाद

बंगाल के सभी लोगों का उद्धार करने की इच्छा से श्री चैतन्य महाप्रभु ने नकुल ब्रह्मचारी के हृदय में प्रवेश किया।

ग्रह-ग्रस्त-प्राय नकुल प्रेमाविष्ट हञा ।
हासे, कान्दे, नाचे, गाय उन्मत्त हञा ॥ १८॥

ग्रह-ग्रस्त-प्राय नकुल प्रेमाविष्ट हञा ।
हासे, कान्दे, नाचे, गाय उन्मत्त हञा ॥ १८॥

ग्रह-ग्रस्त-प्राय—किसी प्रेत-ग्रस्त व्यक्ति के समान; **नकुल**—नकुल ब्रह्मचारी; **प्रेम-आविष्ट हञा**—भगवान् के प्रेमभाव से अभिभूत होकर; **हासे**—हँसते; **काण्दे**—रोते; **नाचे**—नाचते; **गाय**—गाते; **उन्मत्त हञा**—एक पागल व्यक्ति की तरह।

अनुवाद

नकुल ब्रह्मचारी भूतप्रेत से सताये हुए व्यक्ति के समान बन गये। इस तरह वे कभी हँसते, तो कभी रोते, कभी नाचते और कभी पागल व्यक्ति की तरह गाते।

अश्रु, कम्प, स्तम्भ, स्वेद, सात्त्विक विकार ।
निरन्तर प्रेमे नृत्य, सघन हुङ्कार ॥ १९॥

अश्रु, कम्प, स्तम्भ, स्वेद, सात्त्विक विकार ।
निरन्तर प्रेमे नृत्य, सघन हुङ्कार ॥ १९ ॥

अश्रु—आँसु; **कम्प**—कम्पन; **स्तम्भ**—स्तब्ध होना; **स्वेद**—पसीना आना; **सात्त्विक विकार**—ऐसे सारे दिव्य विकार; **निरन्तर**—लगातार; **प्रेमे नृत्य**—प्रेमभाव में नाचना; **स-घन हुङ्कार**—एक बादल के समान गर्जन करना।

अनुवाद

वे निरन्तर दिव्य प्रेम के शारीरिक विकार प्रकट करते। इस तरह वे रोते, काँपते, स्तम्भित होते, पसीने से लथपथ होते, भगवत्प्रेम के वशीभूत होकर नाचते और बादल जैसी ध्वनि उत्पन्न करते।

तैछे गौर-कान्ति, तैछे सदा प्रेमावेश ।
ताहा देखिवारे आइसे सर्व गौड़-देश ॥ २० ॥
तैछे गौर-कान्ति, तैछे सदा प्रेमावेश ।
ताहा देखिबारे आइसे सर्व गौड़-देश ॥ २० ॥

तैछे—इस प्रकार; **गौर-कान्ति**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु जैसी शारीरिक कान्ति; **तैछे**—ठीक वैसी ही; **सदा**—सदैव; **प्रेम-आवेश**—प्रेमभाव में आविष्ट; **ताहा देखिबारे**—वह देखने के लिए; **आइसे**—आते थे; **सर्व**—सभी; **गौड़-देश**—बंगाल प्रदेश के लोग।

अनुवाद

उनका शरीर श्री चैतन्य महाप्रभु जैसी कान्ति से चमकता था और वे भगवत्प्रेम में वैसी ही तल्लीनता प्रदर्शित करते थे। इन लक्षणों को देखने के लिए बंगाल के सारे प्रान्तों से लोग आते थे।

यारे देखे तारे कहे,—'कह कृष्ण-नाम' ।
ताँहार दर्शने लोक हय प्रेमोद्दाम ॥ २१ ॥
यारे देखे तारे कहे,—'कह कृष्ण-नाम' ।
ताँहार दर्शने लोक हय प्रेमोद्दाम ॥ २१ ॥

यारे देखे—वे जिस किसी को भी देखते; **तारे कहे**—वे उसे कहते; **कह कृष्ण-नाम**—मेरे प्रिय मित्र, कृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण करो; **ताँहार दर्शने**—उनको देखकर; **लोक हय**—लोग हो गये; **प्रेम-उद्दाम**—भगवत्प्रेम में अति उन्नत।

अनुवाद

जिससे भी वे मिलते, उससे हरे कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन करने को कहते। इस तरह लोग उन्हें देखकर भगवत्प्रेम से अभिभूत हो जाते।

চৈতন্যের আবেশ হয় নকুলের দেহে ।
শুনি' শিবানন্দ আইলা করিয়া সন্দেহে ॥২২॥

चैतन्येर आवेश हय नकुलेर देहे ।
शुनि' शिवानन्द आइला करिया सन्देहे ॥ २२॥

चैतन्येर—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आवेश**—प्रविष्ट हुए; **हय**—हुए हैं; **नकुलेर देहे**—नकुल ब्रह्मचारी की देह में; **शुनि'**—सुनकर; **शिवानन्द आइला**—शिवानन्द सेन आ गये; **करिया सन्देहे**—सन्देह करते हुए।

अनुवाद

जब शिवानन्द सेन ने सुना कि श्री चैतन्य महाप्रभु नकुल ब्रह्मचारी के शरीर में प्रविष्ट हुए हैं, तो वे अपने मन में शंकालु होकर वहाँ गये।

পরীক্ষা করিতে তাঁর যবে ইচ্ছা হৈল ।
বাহিরে রহিয়া তবে বিচার করিল ॥২৩॥

परीक्षा करिते ताँर यबे इच्छा हैल ।
बाहिरे रहिया तबे विचार करिल ॥ २३॥

परीक्षा करिते—परीक्षा करने के लिए; **ताँर**—शिवानन्द सेन की; **यबे**—जब; **इच्छा**—इच्छा; **हैल**—हुई; **बाहिरे रहिया**—बाहर रहकर; **तबे**—उस समय; **विचार करिल**—विचार करने लगे।

अनुवाद

नकुल ब्रह्मचारी की प्रामाणिकता की परीक्षा करने की इच्छा से वे इस प्रकार सोचते हुए बाहर ही खड़े रहे।

"আপনে বোলান মোরে, ইহা যদি জানি ।
আমার ইষ্ট-মন্ত্র জানি' কহেন আপনি ॥২৪॥

তবে জানি, ইঁহাতে হয় চৈতন্য-আবেশে'' ।
এত চিন্তি' শিবানন্দ রহিলা দূর-দেশে ॥ ২৫ ॥

"আপনে বোলান মোরে, ইহা যদি জানি ।
আমার ইষ্ট-মন্ত্র জানি' কহেন আপনি ॥ ২৪ ॥
তবে জানি, ইঁহাতে হয় চৈতন্য-আবেশে" ।
এত চিন্তি' শিবানন্দ রহিলা দূর-দেশে ॥ ২৫ ॥

आपने—स्वयं; **बोलान**—बुलाता है; **मोरे**—मुझे; **इहा**—यह; **यदि**—यदि; **जानि**—मुझको; **आमार**—मेरा; **इष्ट-मन्त्र**—पूजा का मन्त्र; **जानि'**—जानकर; **कहेन आपनि**—वह स्वयं बताता है; **तबे जानि**—तब मैं मानूँगा; **इँहाते**—इसमें; **हय**—हुआ है; **चैतन्य-आवेशे**—चैतन्य महाप्रभु का आवेश; **एत चिन्ति'**—यह सोचकर; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **रहिला**—रह गये; **दूर-देशे**—थोड़ी दूरी पर।

अनुवाद

"यदि नकुल ब्रह्मचारी मुझे अपने आप बुलाता है और मेरा इष्ट मन्त्र जान लेता है, तो मैं समझूँगा कि वह श्री चैतन्य महाप्रभु की उपस्थिति से आवेशित है।" इस तरह सोचते हुए वे कुछ दूरी पर रुके रहे।

অসঙ্খ্য লোকের ঘটা,—কেহ আইসে যায় ।
লোকের সঙ্ঘট্টে কেহ দর্শন না পায় ॥ ২৬ ॥

অসঙ্খ্য লোকের ঘটা,—কেহ আইসে যায় ।
লোকের সঙ্ঘট্টে কেহ দর্শন না পায় ॥ ২৬ ॥

असङ्ख्य लोकेर घटा—लोगों की विशाल भीड़; **केह**—कुछ; **आइसे**—आते; **याय**—जाते; **लोकेर सङ्घट्टे**—लोगों की बड़ी भीड़ में; **केह**—उनमें से कुछ; **दर्शन ना पाय**—नकुल ब्रह्मचारी को देख नहीं सके।

अनुवाद

वहाँ लोगों की बड़ी भीड़ थी। कुछ लोग आ रहे थे और कुछ जा रहे थे। निस्सन्देह, उस विशाल भीड़ में कुछ लोग नकुल ब्रह्मचारी का दर्शन तक नहीं कर सके।

আবেশে ব্রহ্মচারী কহে,—'শিবানন্দ আছে দূরে ।
জন দুই চারি যাহ, বোলাহ তাহারে' ॥ ২৭ ॥

आवेशे ब्रह्मचारी कहे,—'शिवानन्द आछे दूरे ।
जन दुइ चारि याह, बोलाह ताहारे' ॥ २७॥

आवेशे—उस आवेश की स्थिति में; **ब्रह्मचारी कहे**—नकुल ब्रह्मचारी बोले; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **आछे दूरे**—कुछ दूरी पर खड़ा है; **जन**—लोग; **दुइ**—दो; **चारि**—चार; **याह**—जाओ; **बोलाह ताहारे**—उसे बुलाओ।

अनुवाद

नकुल ब्रह्मचारी ने अपनी आवेशित अवस्था में कहा, "शिवानन्द कुछ दूरी पर रुका हुआ है। तुम में से दो-चार लोग जाकर उसे बुला लाओ।"

चारि-दिके धाय लोके 'शिवानन्द' बलि ।
शिवानन्द कोन्, तोमाय बोलाय ब्रह्मचारी ॥ २८॥

चारि-दिके धाय लोके 'शिवानन्द' बलि ।
शिवानन्द कोन्, तोमाय बोलाय ब्रह्मचारी ॥ २८॥

चारि-दिके—चारों दिशाओं में; **धाय लोके**—लोग भागने लगे; **शिवानन्द बलि**—शिवानन्द का नाम उच्च स्वर में पुकारते; **शिवानन्द कोन्**—जो कोई भी शिवानन्द है; **तोमाय**—तुम्हें; **बोलाय**—बुला रहे हैं; **ब्रह्मचारी**—नकुल ब्रह्मचारी।

अनुवाद

इस तरह लोग चारों दिशाओं में इस तरह पुकारते हुए इधर-उधर दौड़ने लगे, "शिवानन्द! जो भी शिवानन्द हो, कृपया आ जाओ। नकुल ब्रह्मचारी तुम्हें बुला रहे हैं।"

शुनि', शिवानन्द सेन ताँहा शीघ्र आइल ।
नमस्कार करि' ताँर निकटे वसिल ॥ २९॥

शुनि', शिवानन्द सेन ताँहा शीघ्र आइल ।
नमस्कार करि' ताँर निकटे वसिल ॥ २९॥

शुनि'—सुनकर; **शिवानन्द सेन**—शिवानन्द सेन; **ताँहा**—वहाँ पर; **शीघ्र**—जल्दी; **आइल**—आ गये; **नमस्कार करि'**—प्रणाम करके; **ताँर निकटे**—उनके समीप; **वसिल**—बैठ गये।

अनुवाद

उनकी बुलाने की आवाज सुनकर शिवानन्द सेन तुरन्त वहाँ गये, उन्होंने नकुल ब्रह्मचारी को नमस्कार किया और वे उनके निकट बैठ गये।

ब्रह्मचारी बले,—"तुमि करिला संशय ।
एक-मना हञा शुन ताहार निश्चय ॥ ३०॥

ब्रह्मचारी बले,—"तुमि करिला संशय ।
एक-मना हञा शुन ताहार निश्चय ॥ ३०॥

ब्रह्मचारी बले—नकुल ब्रह्मचारी ने कहा; **तुमि**—तुमने; **करिला संशय**—संशय किया; **एक-मना हञा**—सावधानीपूर्वक; **शुन**—कृपया सुनो; **ताहार**—उसके लिए; **निश्चय**—प्रमाण।

अनुवाद

नकुल ब्रह्मचारी ने कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम्हें संशय है। अब इसका प्रमाण अत्यन्त ध्यान से सुनो।

'गौर-गोपाल मन्त्र' तोमार चारि अक्षर ।
अविश्वास छाड़, येइ करियाछ अन्तर" ॥ ३१॥

'गौर-गोपाल मन्त्र' तोमार चारि अक्षर ।
अविश्वास छाड़, येइ करियाछ अन्तर" ॥ ३१॥

गौर-गोपाल मन्त्र—गौर गोपाल मन्त्र; **तोमार**—तुम्हारा; **चारि अक्षर**—चार अक्षरों से बना है; **अविश्वास छाड़**—अपना सन्देह त्याग दो; **येइ**—जो; **करियाछ अन्तर**—तुमने अपने मन में रखा हुआ है।

अनुवाद

"तुम चार अक्षरों वाला गौर गोपाल मन्त्र का जप करते हो। अब तुम अपने मन के भीतर बसने वाले संशय को त्याग दो।"

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत प्रवाह भाष्य* में गौर गोपाल मन्त्र की व्याख्या दी है। श्री गौरसुन्दर के उपासक गौ-र-अङ्-ग—इन चार अक्षरों

को गौर मन्त्र मानते हैं, किन्तु राधा-कृष्ण के शुद्ध उपासक रा-धा-कृष्-ण—इन चार अक्षरों को गौर मन्त्र मानते हैं। किन्तु वैष्णवजन श्री चैतन्य महाप्रभु को राधा-कृष्ण से अभिन्न (*श्रीकृष्णचैतन्य राधाकृष्ण नहे अन्य*) मानते हैं। इसलिए जो *गौराङ्ग* मन्त्र का जप करता है और जो राधा-कृष्ण के नामों का जप करता है, वे एक ही स्तर पर होते हैं।

तबे शिवानन्देर मने प्रतीति हइल ।
अनेक सम्मान करि' बहु भक्ति कैल ॥ ३२॥

तबे शिवानन्देर मने प्रतीति हइल ।
अनेक सम्मान करि' बहु भक्ति कैल ॥ ३२॥

तबे—उसके बाद; **शिवानन्देर**—शिवानन्द सेन के; **मने**—मन में; **प्रतीति हइल**—विश्वास हो गया; **अनेक सम्मान करि'**—उनका अत्यधिक सम्मान करके; **बहु भक्ति कैल**—उनकी प्रेममयी सेवा करने लगे।

अनुवाद

इस पर शिवानन्द सेन ने अपने मन में पूर्ण विश्वास उत्पन्न कर लिया कि नकुल ब्रह्मचारी श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा आविष्ट है। तब शिवानन्द सेन ने उसका आदर किया तथा भक्तिमयी सेवा की।

एइ-मत महाप्रभुर अचिन्त्य प्रभाव ।
एबे शुन प्रभुर यैछे हय 'आविर्भाव' ॥ ३३॥

एइ-मत महाप्रभुर अचिन्त्य प्रभाव ।
एबे शुन प्रभुर यैछे हय 'आविर्भाव' ॥ ३३॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **अचिन्त्य प्रभाव**—अकल्पनीय प्रभाव; **एबे**—अब; **शुन**—सुनो; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **यैछे**—किस प्रकार; **हय**—हुआ; **आविर्भाव**—प्राकट्य।

अनुवाद

इस तरह से श्री चैतन्य महाप्रभु की अचिन्त्य शक्तियों को समझना चाहिए। अब जिस तरह से उनका आविर्भाव होता है, उसे सुनिये।

শচীর মন্দিরে, আর নিত্যানন্দ-নর্তনে ।
শ্রীবাস-কীর্তনে, আর রাঘব-ভবনে ॥ ৩৪ ॥
এই চারি ঠাঞি প্রভুর সদা 'আবির্ভাব' ।
প্রেমাকৃষ্ট হয়,—প্রভুর সহজ স্বভাব ॥ ৩৫ ॥

शचीर मन्दिरे, आर नित्यानन्द-नर्तने ।
श्रीवास-कीर्तने, आर राघव-भवने ॥ ३४ ॥
एइ चारि ठाञि प्रभुर सदा 'आविर्भाव' ।
प्रेमाकृष्ट हय,—प्रभुर सहज स्वभाव ॥ ३५ ॥

शचीर मन्दिरे—माता शची के घर के मन्दिर में; **आर**—तथा; **नित्यानन्द-नर्तने**—श्री नित्यानन्द प्रभु के नृत्य के समय; **श्रीवास-कीर्तने**—श्रीवास पण्डित नेतृत्व में हो रहे संकीर्तन के समय; **आर**—और; **राघव-भवने**—राघव के घर में; **एइ चारि ठाञि**—इन चार स्थानों में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सदा**—सदैव; **आविर्भाव**—प्राकट्य; **प्रेम-आकृष्ट हय**—प्रेम से आकृष्ट होते हैं; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सहज स्वभाव**—स्वाभाविक लक्षण है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु सदैव चार स्थानों में प्रकट हुए—ये हैं—माता शची के घरेलू मन्दिर में, श्री नित्यानन्द प्रभु के नृत्य करने के स्थानों में, सामूहिक कीर्तन के समय श्रीवास पण्डित के घर में तथा राघव पण्डित के घर में। वे अपने भक्तों के प्रेम के प्रति आकर्षित होने के कारण प्रकट हुए। यही उनका सहज स्वभाव है।

নৃসিংহানন্দের আগে আবির্ভূত হঞা ।
ভোজন করিলা, তাহা শুন মন দিয়া ॥ ৩৬ ॥

नृसिंहानन्देर आगे आविर्भूत हञा ।
भोजन करिला, ताहा शुन मन दिया ॥ ३६ ॥

नृसिंहानन्देर—नृसिंहानन्द नामक ब्रह्मचारी के; **आगे**—समक्ष; **आविर्भूत हञा**—प्रकट हुए; **भोजन करिला**—उन्होंने (भोजन का) भोग स्वीकार किया; **ताहा**—वह; **शुन**—सुनो; **मन दिया**—ध्यानपूर्वक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी के समक्ष प्रकट हुए और

उन्होंने उसका दिया भोजन ग्रहण किया। कृपया इसके विषय में ध्यान लगाकर सुनें।

শিবানন্দের ভাগিনা শ্রীকান্ত-সেন নাম ।
প্রভুর কৃপাতে তেঁহো বড় ভাগ্যবান্ ॥ ৩৭॥

शिवानन्देर भागिना श्रीकान्त-सेन नाम ।
प्रभुर कृपाते तेंहो बड़ भाग्यवान् ॥ ३७॥

शिवानन्देर—शिवानन्द सेन का; **भागिना**—भाँजा; **श्रीकान्त-सेन नाम**—श्रीकान्त सेन नामक; **प्रभुर कृपाते**—श्री चैतन्य महाप्रभु की अहैतुकी कृपा द्वारा; **तेंहो**—वह; **बड़**—बहुत; **भाग्यवान्**—सौभाग्यशाली।

अनुवाद

शिवानन्द सेन का एक भांजा था, जिसका नाम श्रीकान्त सेन था, जो श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से अत्यन्त भाग्यशाली था।

এক বৎসর তেঁহো প্রথম একেশ্বর ।
প্রভু দেখিবারে আইলা উৎকণ্ঠা-অন্তর ॥ ৩৮॥

एक वत्सर तेंहो प्रथम एकेश्वर ।
प्रभु देखिबारे आइला उत्कण्ठा-अन्तर ॥ ३८॥

एक वत्सर—एक वर्ष; **तेंहो**—श्रीकान्त सेन; **प्रथम**—पहले; **एकेश्वर**—अकेला; **प्रभु देखिबारे**—महाप्रभु के दर्शन के लिए; **आइला**—आया; **उत्कण्ठा-अन्तर**—मन में अत्यन्त उत्सुकता के साथ।

अनुवाद

एक वर्ष श्रीकान्त सेन महाप्रभु का दर्शन करने की अतीव उत्सुकता से अकेले ही जगन्नाथ पुरी आया।

মহাপ্রভু তারে দেখি' বড় কৃপা কৈলা ।
মাস-দুই তেঁহো প্রভুর নিকটে রহিলা ॥ ৩৯॥

महाप्रभु तारे देखि' बड़ कृपा कैला ।
मास-दुइ तेंहो प्रभुर निकटे रहिला ॥ ३९॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **तारे**—उसे; **देखि'**—देखकर; **बड़ कृपा कैला**—अत्यन्त कृपा की; **मास-दुइ**—दो महीने के लिए; **तेंहो**—श्रीकान्त सेन; **प्रभुर निकटे**—चैतन्य महाप्रभु के निकट; **रहिला**—रहा।

अनुवाद

श्रीकान्त सेन को देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस पर अहैतुकी कृपा की। श्रीकान्त सेन जगन्नाथ पुरी में लगभग दो महीने तक श्री चैतन्य महाप्रभु के पास रहा।

तबे प्रभु ताँरे आज्ञा कैला गौड़े याइते ।
"भक्त-गणे निषेधिह एथाके आसिते ॥ ४०॥
तबे प्रभु ताँरे आज्ञा कैला गौड़े य्राइते ।
"भक्त-गणे निषेधिह एथाके आसिते ॥ ४०॥

तबे—तब; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उसे; **आज्ञा कैला**—आदेश दिया; **गौड़े य्राइते**—बंगाल लौटने का; **भक्त-गणे**—भक्तजनों को; **निषेधिह**—रोक दो; **एथाके आसिते**—इस स्थान पर आने से।

अनुवाद

जब वह बंगाल लौटने वाला था, तो महाप्रभु ने उससे कहा, "इस वर्ष बंगाल के भक्तों को जगन्नाथ पुरी आने से मना कर देना।

ए-वत्सर ताँहा आमि याइमु आपने ।
ताहाइ मिलिमु सब अद्वैतादि सने ॥ ४१॥
ए-वत्सर ताँहा आमि य्राइमु आपने ।
ताहाइ मिलिमु सब अद्वैतादि सने ॥ ४१॥

ए-वत्सर—इस वर्ष; **ताँहा**—वहाँ (बंगाल में); **आमि**—मैं; **य्राइमु**—जाऊँगा; **आपने**—स्वयं; **ताहाइ**—वहाँ; **मिलिमु**—मैं मिलूँगा; **सब**—सभी से; **अद्वैत-आदि**—अद्वैत आचार्य से लेकर; **सने**—साथ।

अनुवाद

"इस वर्ष मैं स्वयं बंगाल जाऊँगा और वहाँ अद्वैत आचार्य इत्यादि सारे भक्तों से मिलूँगा।

শিবানন্দে কহিহ,——আমি এই পৌষ-মাসে ।
আচম্বিতে অবশ্য আমি যাইব তাঁর পাশে ॥ ৪২ ॥

শিবানন্দে কহিহ,——আমি এই পৌষ-মাসে ।
আচম্বিতে অবশ্য আমি য়াইব তাঁর পাশে ॥ ৪২ ॥

শিবানন্দে কহিহ—শিবানন্দ सेन से कहो; **আমি**—मैं; **এই**—यह; **পৌষ-মাসে**—पौष (दिसम्बर-जनवरी) महीने में; **আচম্বিতে**—अचानक ही; **অবশ্য**—निश्चित रूप से; **আমি**—मैं; **য়াইব**—जाऊँगा; **তাঁর পাশে**—उसके स्थान पर।

अनुवाद

"तुम शिवानन्द सेन को यह बता देना कि इस पौष (दिसम्बर-जनवरी) मास में मैं अवश्य ही उसके घर जाऊँगा।

জগদানন্দ হয় তাহাঁ, তেঁহো ভিক্ষা দিবে ।
সবারে কহিহ,——এ বৎসর কেহ না আসিবে'' ॥ ৪৩ ॥

জগদানন্দ হয় তাহাঁ, তেঁহো ভিক্ষা দিবে ।
সবারে কহিহ,——এ বৎসর কেহ না আসিবে" ॥ ৪৩ ॥

জগদানন্দ—जगदानन्द; **হয়**—है; **তাহাঁ**—वहाँ; **তেঁহো**—वे; **ভিক্ষা দিবে**—भोजन प्रदान करेंगे; **সবারে কহিহ**—उन सभी को सूचित कर दो; **এ বৎসর**—इस वर्ष; **কেহ না আসিবে**—कोई भी न आये।

अनुवाद

"वहाँ पर जगदानन्द हैं। वे मुझे भोजन की भिक्षा देंगे। उन सबसे कहना कि इस वर्ष कोई भी जगन्नाथ पुरी न आये।"

শ্রীকান্ত আসিয়া গৌড়ে সন্দেশ কহিল ।
শুনি' ভক্ত-গণ-মনে আনন্দ হইল ॥ ৪৪ ॥

শ্রীকান্ত আসিয়া গৌড়ে সন্দেশ কহিল ।
শুনি' ভক্ত-গণ-মনে আনন্দ হইল ॥ ৪৪ ॥

শ্রীকান্ত—श्रीकान्त सेन; **আসিয়া**—वापस लौटकर; **গৌড়ে**—बंगाल में; **সন্দেশ**—सन्देश; **কহিল**—कहा; **শুনি'**—सुनकर; **ভক্ত-গণ-মনে**—भक्तों के मनों में; **আনন্দ হইল**—अत्यन्त आनन्द हुआ।

अनुवाद

जब श्रीकान्त सेन ने बंगाल लौटकर यह सन्देश दिया, तो सारे भक्तों के मन अतीव प्रसन्न हो गये।

चलितेछिला आचार्य, रहिला स्थिर हञा ।
शिवानन्द, जगदानन्द रहे प्रत्याशा करिया ॥ ४५ ॥

चलितेछिला आचार्य्य, रहिला स्थिर हञा ।
शिवानन्द, जगदानन्द रहे प्रत्याशा करिया ॥ ४५ ॥

चलितेछिला—जाने के लिए तैयार; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **रहिला**—रुक गये; **स्थिर हञा**—स्थिर होकर; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **जगदानन्द**—जगदानन्द; **रहे**—रह गये; **प्रत्याशा करिया**—उम्मीद करके।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य अन्य भक्तों के साथ जगन्नाथ पुरी जाने ही वाले थे, किन्तु यह सन्देश सुनकर वे रुक गये। शिवानन्द सेन तथा जगदानन्द भी श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करते रुके रहे।

पौष-मासे आइल दुँहे सामग्री करिया ।
सन्ध्या-पर्य्यन्त रहे अपेक्षा करिया ॥ ४६ ॥

पौष-मासे आइल दुँहे सामग्री करिया ।
सन्ध्या-पर्य्यन्त रहे अपेक्षा करिया ॥ ४६ ॥

पौष-मासे—पौष मास (दिसम्बर-जनवरी) में; **आइल**—आये; **दुँहे**—शिवानन्द सेन तथा जगदानन्द; **सामग्री करिया**—सब तैयारियाँ करके; **सन्ध्या-पर्य्यन्त**—सायंकाल तक; **रहे**—रुके रहे; **अपेक्षा करिया**—प्रतीक्षा करते।

अनुवाद

जब पौष मास आया, तो शिवानन्द तथा जगदानन्द दोनों ने महाप्रभु के स्वागत के लिए सभी प्रकार की सामग्री एकत्र की। वे प्रतिदिन सन्ध्या समय तक महाप्रभु के आने की प्रतीक्षा किया करते।

এই-মত মাস গেল, গোসাঞি না আইলা ।
জগদানন্দ, শিবানন্দ দুঃখিত হইলা ॥ ৪৭ ॥

এइ-মত মাস গেল, গোসাঞি না আইলা ।
জগদানন্দ, শিবানন্দ দুঃখিত হইলা ॥ ৪৭ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **মাস গেল**—महीना बीत गया; **গোসাঞি না আইলা**—श्री चैतन्य महाप्रभु नहीं आये; **জগদানন্দ**—जगदानन्द; **শিবানন্দ**—शिवानन्द; **দুঃখিত হ-ইলা**—अत्यन्त दुःखी हुए।

अनुवाद

जब महीना बीत गया, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु नहीं आये, तो जगदानन्द तथा शिवानन्द अत्यधिक दुःखी हुए।

আচম্বিতে নৃসিংহানন্দ তাহাঞি আইলা ।
দুঁহে তাঁরে মিলি' তবে স্থানে বসাইলা ॥ ৪৮ ॥
দুঁহে দুঃখী দেখি' তবে কহে নৃসিংহানন্দ ।
'তোমা দুঁহাকারে কেনে দেখি নিরানন্দ?' ॥ ৪৯ ॥

আচম্বিতে নৃসিংহানন্দ তাহাঞি আইলা ।
দুঁহে তাঁরে মিলি' তবে স্থানে বসাইলা ॥ ৪৮ ॥
দুঁহে দুঃখী দেখি' তবে কহে নৃসিংহানন্দ ।
'তোমা দুঁহাকারে কেনে দেখি নিরানন্দ?' ॥ ৪৯ ॥

আচম্বিতে—अचानक; **নৃসিংহানন্দ**—नृसिंहानन्द; **তাহাঞি আইলা**—वहाँ आ गये; **দুঁহে**—शिवानन्द और जगदानन्द; **তাঁরে**—उनसे; **মিলি'**—मिलकर; **তবে**—तब; **স্থানে বসাইলা**—आसन पर बिठाया; **দুঁহে**—दोनों को; **দুঃখী**—अप्रसन्न; **দেখি'**—देखकर; **তবে**—तब; **কহে নৃসিংহানন্দ**—नृसिंहानन्द ने कहा; **তোমা দুঁহাকারে**—आप दोनों को; **কেনে**—क्यों; **দেখি**—मैं देख रहा हूँ; **নিরানন্দ**—दुःखी।

अनुवाद

एकाएक नृसिंहानन्द आये। जगदानन्द तथा शिवानन्द ने उन्हें अपने निकट बैठाने का प्रबन्ध किया। उन दोनों को इतने दुःखी देखकर नृसिंहानन्द ने पूछा, "मैं आप दोनों को निराश क्यों देख रहा हूँ?"

তবে শিবানন্দ তাঁরে সকল কহিলা ।
'আসিব আজ্ঞা দিলা প্রভু কেনে না আইলা?' ॥৫০॥

তবে শিবানন্দ তাঁরে সকল কহিলা ।
'আসিব আজ্ঞা দিলা প্রভু কেনে না আইলা?' ॥৫০॥

তবে—इस पर; **শিবানন্দ**—शिवानन्द ने; **তাঁরে**—नृसिंहानन्द को; **সকল কহিলা**—सब कुछ बता दिया; **আসিব**—मैं आऊँगा; **আজ্ঞা দিলা**—वचन दिया था; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **কেনে**—क्यों; **না আইলা**—वे नहीं आये।

अनुवाद

तब शिवानन्द सेन ने उनसे कहा, "श्री चैतन्य महाप्रभु ने वचन दिया था कि वे आयेंगे। तो फिर वे क्यों नहीं आये?"

শুনি' ব্রহ্মচারী কহে,—'করহ সন্তোষে ।
আমি ত' আনিব তাঁরে তৃতীয় দিবসে' ॥৫১॥

শুনি' ব্রহ্মচারী কহে,—'করহ সন্তোষে ।
আমি ত' আনিব তাঁরে তৃতীয় দিবসে' ॥৫১॥

শুনি'—सुनकर; **ব্রহ্মচারী**—नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी; **কহে**—बोले; **করহ সন্তোষে**—प्रसन्न हो जाओ; **আমি**—मैं; **ত'**—निश्चित रूप से; **আনিব**—लाऊँगा; **তাঁরে**—उन्हें (श्री चैतन्य महाप्रभु को); **তৃতীয় দিবসে**—तीसरे दिन।

अनुवाद

यह सुनकर नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी ने उत्तर दिया, "तुम लोग सन्तोष रखो। मैं तुम दोनों को विश्वास दिलाता हूँ कि आज से तीसरे दिन मैं उन्हें यहाँ ले आऊँगा।"

তাঁহার প্রভাব-প্রেম জানে দুই-জনে ।
আনিবে প্রভুরে এবে নিশ্চয় কৈলা মনে ॥৫২॥

তাঁহার প্রভাব-প্রেম জানে দুই-জনে ।
আনিবে প্রভুরে এবে নিশ্চয় কৈলা মনে ॥৫২॥

তাঁহার—उनका; **প্রভাব**—प्रभाव; **প্রেম**—भगवत्प्रेम; **জানে**—जानते थे; **দুই-জনে**—वे

दोनों; **आनिबे प्रभुरे**—ये श्री चैतन्य महाप्रभु को ले आयेंगे; **एबे**—अब; **निश्चय कैला मने**—उन्हें अपने मनों में गहरा विश्वास हो गया।

अनुवाद

शिवानन्द तथा जगदानन्द नृसिंहानन्द के प्रभाव तथा भगवत्प्रेम को जानते थे। इसलिए अब वे आश्वस्त हो गये कि वे निश्चय ही श्री चैतन्य महाप्रभु को ले आयेंगे।

'प्रद्युम्न ब्रह्मचारी'—ताँर निज-नाम ।
'नृसिंहानन्द' नाम ताँर कैला गौर-धाम ॥५३॥

'प्रद्युम्न ब्रह्मचारी'—ताँर निज-नाम ।
'नृसिंहानन्द' नाम ताँर कैला गौर-धाम ॥५३॥

प्रद्युम्न ब्रह्मचारी—प्रद्युम्न ब्रह्मचारी; **ताँर**—उनका; **निज-नाम**—असली नाम था; **नृसिंहानन्द**—नृसिंहानन्द; **नाम**—नाम; **ताँर**—उनका; **कैला गौर-धाम**—श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा दिया गया था।

अनुवाद

उनका असली नाम प्रद्युम्न ब्रह्मचारी था। उनका नृसिंहानन्द नाम स्वयं भगवान् गौरसुन्दर ने रखा था।

दुइ दिन ध्यान करि' शिवानन्देरे कहिल ।
"पाणिहाटि ग्रामे आमि प्रभुरे आनिल ॥५४॥

दुइ दिन ध्यान करि' शिवानन्देरे कहिल ।
"पाणिहाटि ग्रामे आमि प्रभुरे आनिल ॥५४॥

दुइ दिन—दो दिन तक; **ध्यान करि'**—ध्यान करके; **शिवानन्देरे कहिल**—उन्होंने शिवानन्द सेन से कहा; **पाणिहाटि ग्रामे**—पाणिहाटि नामक गाँव में; **आमि**—मैं; **प्रभुरे आनिल**—श्री चैतन्य महाप्रभु को ले आया हूँ।

अनुवाद

दो दिनों तक ध्यान करने के बाद नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी ने शिवानन्द को बतलाया, "मैं अब श्री चैतन्य महाप्रभु को पाणिहाटि नामक गाँव तक ले आया हूँ।

কালি মধ্যাহ্নে তেঁহো আসিবেন তোমার ঘরে ।
পাক-সামগ্রী আনহ, আমি ভিক্ষা দিমু তাঁরে ॥৫৫॥

কালি মধ্যাহ্নে তেঁহো আসিবেন তোমার ঘরে ।
পাক-সামগ্রী আনহ, আমি ভিক্ষা দিমু তাঁরে ॥৫৫॥

कालि मध्याह्ने—कल दोपहर को; **तेंहो**—वे; **आसिबेन**—आयेंगे; **तोमार घरे**—आपके घर; **पाक-सामग्री आनह**—कृपया भोजन पकाने की आवश्यक सामग्री ले आयें; **आमि**—मैं; **भिक्षा दिमु**—भोजन पकाऊँगा और भोग लगाऊँगा; **ताँरे**—उनको।

अनुवाद

"वे कल दोपहर में आपके घर आयेंगे। इसलिए भोजन बनाने की सारी सामग्री ले आयें। मैं स्वयं भोजन बनाऊँगा और उन्हें भोजन दूँगा।

তবে তাঁরে এথা আমি আনিব সত্বর ।
নিশ্চয় কহিলাঙ, কিছু সন্দেহ না কর ॥৫৬॥

তবে তাঁরে এথা আমি আনিব সত্বর ।
নিশ্চয় কহিলাঙ; কিছু সন্দেহ না কর ॥৫৬॥

तबे—इस प्रकार; **ताँरे**—उन्हें; **एथा**—यहाँ; **आमि**—मैं; **आनिब सत्वर**—शीघ्र ही ले आऊँगा; **निश्चय**—निश्चित रूप से; **कहिलाङ**—मैं कहता हूँ; **किछु सन्देह ना कर**—सन्देह मत करो।

अनुवाद

"इस प्रकार से मैं उन्हें शीघ्र ही यहाँ ले आऊँगा। आप आश्वस्त रहो कि मैं सच कह रहा हूँ। आप सन्देह मत करो।

যে চাহিয়ে, তাহা কর হঞা তৎপর ।
অতি ত্বরায় করিব পাক, শুন অতঃপর ॥৫৭॥

যে চাহিয়ে, তাহা কর হঞা তৎপর ।
অতি ত্বরায় করিব পাক, শুন অতঃপর ॥৫৭॥

যে চাহিয়ে—मैं जो भी चाहता हूँ; **তাহা কর**—वह सब व्यवस्था करो; **হঞা তৎপর**—तत्पर होकर; **অতি ত্বরায়**—शीघ्र ही; **করিব পাক**—मैं पकाना प्रारम्भ करूँगा; **শুন অতঃপর**—आगे और सुनो।

अनुवाद

"आप तुरन्त सारी सामग्री लाओ, क्योंकि मैं तुरन्त रसोई पकाना शुरू करना चाहता हूँ। मैं जो कहता हूँ वह कृपया करें।"

পাক-সামগ্রী আনহ, আমি যাহা চাই' ।
যে মাগিল, শিবানন্দ আনি' দিলা তাই ॥৫৮॥

পাক-সামগ্রী আনহ, আমি য়াহা চাই' ।
য়ে মাগিল, শিবানন্দ আনি' দিলা তাই ॥৫৮॥

पाक-सामग्री आनह—सभी पाक सामग्रियाँ ले आयें; **आमि य़ाहा चाइ**—जो भी मैं चाहता हूँ; **य़े मागिल**—उन्होंने जो भी माँगा; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन ने; **आनि'**—लाकर; **दिला ताइ**—सब कुछ दे दिया।

अनुवाद

नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी ने शिवानन्द से कहा, "मैं जो भी भोजन-सामग्री चाहता हूँ, कृपया आप ले आयें।" इस तरह उन्होंने जो भी माँगा, शिवानन्द सेन तुरन्त ले आये।

প্রাতঃ-কাল হৈতে পাক করিলা অপার ।
নানা ব্যঞ্জন, পিঠা, ক্ষীর নানা উপহার ॥৫৯॥

প্রাতঃ-কাল হৈতে পাক করিলা অপার ।
নানা ব্যঞ্জন, পিঠা, ক্ষীর নানা উপহার ॥৫৯॥

प्रातः-काल हैते—सुबह से प्रारम्भ करके; **पाक करिला अपार**—अनेक प्रकार के व्यंजन पका दिये; **नाना व्यञ्जन**—अनेक प्रकार की सब्जियाँ; **पिठा**—मिठाईयाँ; **क्षीर**—खीर; **नाना**—अनेक; **उपहार**—व्यंजन थे।

अनुवाद

प्रातःकाल शीघ्र ही शुरू करके नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी ने अनेक प्रकार के भोजन तैयार किये, जिनमें सब्जियाँ, रोटियाँ, खीर तथा अन्य पकवान थे।

জগন্নাথের ভিন্ন ভোগ পৃথক্কাড়িল ।
চৈতন্য প্রভুর লাগি' আর ভোগ কৈল ॥৬০॥

जगन्नाथेर भिन्न भोग पृथक्बाड़िल ।
चैतन्य प्रभुर लागि' आर भोग कैल ॥ ६० ॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ के लिए; **भिन्न**—भिन्न; **भोग**—व्यंजन; **पृथक्**—अलग से; **बाड़िल**—तैयार किये; **चैतन्य प्रभुर लागि'**—श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए; **आर**—अलग; **भोग**—व्यंजन; **कैल**—बनाये।

अनुवाद

भोजन पकाने के बाद वे जगन्नाथ तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए अलग-अलग भोग ले आये।

ইষ্ট-দেব নৃসিংহ লাগি' পৃথক্কাড়িল ।
তিন-জনে সমর্পিয়া বাহিরে ধ্যান কৈল ॥ ৬১ ॥

इष्ट-देव नृसिंह लागि' पृथक्बाड़िल ।
तिन-जने समर्पिया बाहिरे ध्यान कैल ॥ ६१ ॥

इष्ट-देव—आराध्य देव; **नृसिंह**—भगवान् नृसिंहदेव; **लागि'**—के लिए; **पृथक्**—अलग से; **बाड़िल**—व्यवस्था की; **तिन-जने**—तीन विग्रहों के लिए; **समर्पिया**—भोग अर्पित करके; **बाहिरे**—बाहर; **ध्यान कैल**—ध्यान करने लगे।

अनुवाद

उन्होंने अपने आराध्य देव नृसिंहदेव का भी अलग से भोग लगाया। इस तरह उन्होंने समस्त भोजन को तीन भोगों में बाँट दिया। तब मन्दिर के बाहर वे महाप्रभु का ध्यान करने लगे।

দেখে, শীঘ্র আসি' বসিলা চৈতন্য-গোসাঞি ।
তিন ভোগ খাইলা, কিছু অবশিষ্ট নাই ॥ ৬২ ॥

देखे, शीघ्र आसि' वसिला चैतन्य-गोसाञि ।
तिन भोग खाइला, किछु अवशिष्ट नाइ ॥ ६२ ॥

देखे—वे देखते हैं; **शीघ्र आसि'**—तुरन्त आकर; **वसिला**—बैठ गये; **चैतन्य-गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तिन भोग**—तीन भिन्न भिन्न भोग; **खाइला**—वे खा गये; **किछु अवशिष्ट नाइ**—वहाँ कुछ भी अवशिष्ट नहीं बचा।

अनुवाद

उन्होंने ध्यान में देखा कि श्री चैतन्य महाप्रभु तेजी से आये, बैठ गये और तीनों भोग खा गये, कुछ भी शेष नहीं बचा।

আনন্দে বিহ্বল প্রদ্যুম্ন, পড়ে অশ্রু-ধার ।
''হাহা কিবা কর'' বলি' করয়ে ফুত্কার ॥৬৩॥

आनन्दे विह्वल प्रद्युम्न, पड़े अश्रु-धार ।
"हाहा किबा कर" बलि' करये फुत्कार ॥६३॥

आनन्दे विह्वल—दिव्य आनन्द द्वारा भावविभोर होकर; **प्रद्युम्न**—प्रद्युम्न ब्रह्मचारी; **पड़े अश्रु-धार**—उनकी आँखों से आँसू बहने लगे; **हाहा**—हाय; **किबा कर**—आप क्या कर रहे हैं; **बलि'**—कहकर; **करये फुत्-कार**—खेद प्रकट करने लगे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को सारा भोजन खाते देखकर प्रद्युम्न ब्रह्मचारी दिव्य आनन्द से विभोर हो गये। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। फिर भी उन्होंने यह कहकर व्याकुलता व्यक्त की, "हाय हाय! मेरे प्रिय प्रभु, आप यह क्या कर रहे हैं? आप तो सबका भोजन खाये जा रहे हैं!

'জগন্নাথে-তোমায় ঐক্য, খাও তাঁর ভোগ ।
নৃসিংহের ভোগ কেনে কর উপয়োগ? ॥৬৪॥

'जगन्नाथे-तोमाय ऐक्य, खाओ ताँर भोग ।
नृसिंहेर भोग केने कर उपयोग? ॥६४॥

जगन्नाथे—भगवान् जगन्नाथ के साथ; **तोमाय**—आपका; **ऐक्य**—एकत्व; **खाओ ताँर भोग**—आप उनका भोग खा सकते हैं; **नृसिंहेर भोग**—नृसिंहदेव का भोग; **केने कर उपयोग**—आप क्यों खा रहे हैं।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप तथा जगन्नाथ एक हैं, इसलिए उनका भोग आप खायें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु आप भगवान् नृसिंहदेव के भोग को क्यों हाथ लगा रहे हैं?

নৃসিংহের হৈল জানি আজি উপবাস ।
ঠাকুর উপবাসী রহে, জিয়ে কৈছে দাস?' ॥৬৫॥

নৃসিংহের হৈল জানি আজি উপবাস ।
ঠাকুর উপবাসী রহে, জিয়ে কৈছে দাস?' ॥৬৫॥

নৃসিংহের—भगवान् नृसिंह का; **हैल**—हो गया; **जानि**—मैं मानता हूँ; **आजि**—आज; **उपवास**—उपवास; **ठाकुर उपवासी रहे**—स्वामी उपवास करके रहें; **जिये कैछे दास**—एक सेवक अपने प्राण कैसे धारण रख सकता है।

अनुवाद

"मैं सोचता हूँ कि नृसिंहदेव आज कुछ भी नहीं खा सके, इसलिए वे उपवास कर रहे हैं। यदि स्वामी उपवास करें, तो सेवक कैसे जीवित रह सकता है?"

ভোজন দেখি' যদ্যপি তাঁর হৃদয়ে উল্লাস ।
নৃসিংহ লক্ষ্য করি' বাহ্যে কিছু করে দুঃখাভাস ॥৬৬॥

ভোজন দেখি' য়দ্যপি তাঁর হৃদয়ে উল্লাস ।
নৃসিংহ লক্ষ্য করি' বাহ্যে কিছু করে দুঃখাভাস ॥৬৬॥

भोजन देखि'—भोजन करते देखकर; **य़द्यपि**—यद्यपि; **ताँर हृदये**—उनके हृदय में; **उल्लास**—आनन्द हुआ; **नृसिंह**—भगवान् नृसिंहदेव; **लक्ष्य करि'**—के लिए; **बाह्ये**—बाहरी रूप से; **किछु**—कुछ; **करे**—करते हैं; **दुःख-आभास**—निराशा के भाव व्यक्त।

अनुवाद

यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु को सारी वस्तुएँ खाते देखकर नृसिंह ब्रह्मचारी को अपने हृदय में प्रसन्नता हुई, किन्तु भगवान् नृसिंहदेव के लिए उन्होंने ऊपर से निराशा व्यक्त की।

স্বয়ং ভগবান্কৃষ্ণ-চৈতন্য-গোসাঞি ।
জগন্নাথ-নৃসিংহ-সহ কিছু ভেদ নাই ॥৬৭॥

স্বয়ং ভগবান্ কৃষ্ণ-চৈতন্য-গোসাঞি ।
জগন্নাথ-নৃসিংহ-সহ কিছু ভেদ নাই ॥৬৭॥

स्वयम्—स्वयं; **भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **कृष्ण-चैतन्य-गोसाञि**—भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु; **जगन्नाथ-नृसिंह-सह**—भगवान् जगन्नाथ और नृसिंहदेव के साथ; **किछु भेद**—कोई भेद; **नाइ**—नहीं है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं। अतः उनमें, भगवान् जगन्नाथ तथा भगवान् नृसिंहदेव में कोई अन्तर नहीं है।

इहा जानिवारे प्रद्युम्नेर गूढ़ हैत मन ।
ताहा देखाइला प्रभु करिया भोजन ॥ ६८॥

इहा जानिबारे प्रद्युम्नेर गूढ़ हैत मन ।
ताहा देखाइला प्रभु करिया भोजन ॥ ६८॥

इहा—यह सत्य; **जानिबारे**—जानने के लिए; **प्रद्युम्नेर**—प्रद्युम्न ब्रह्मचारी का; **गूढ़**—अत्यन्त; **हैत मन**—मन उत्सुक था; **ताहा**—वह; **देखाइला**—प्रकट किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करिया भोजन**—भोजन करके।

अनुवाद

प्रद्युम्न ब्रह्मचारी इस बात को जान लेने के लिए अत्यधिक उत्सुक थे। अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु ने एक प्रत्यक्ष निदर्शन द्वारा उनके समक्ष यह प्रकट किया।

भोजन करिया प्रभु गेला पाणिहाटि ।
सन्तोष पाइला देखि' व्यञ्जन-परिपाटी ॥ ६९॥

भोजन करिया प्रभु गेला पाणिहाटि ।
सन्तोष पाइला देखि' व्यञ्जन-परिपाटी ॥ ६९॥

भोजन करिया—सारा भोग खाने के बाद; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गेला पाणिहाटि**—पाणिहाटि जाने लगे; **सन्तोष पाइला**—वह अत्यन्त सन्तुष्ट हुए; **देखि'**—देखकर; **व्यञ्जन-परिपाटी**—व्यंजनों की तैयारी।

अनुवाद

सारा भोग खा लेने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु पाणिहाटि के लिए

चल दिये। वहाँ पर राघव के घर में तैयार किये गये नाना प्रकार के व्यंजनों को देखकर वे अत्यधिक सन्तुष्ट हुए।

শিবানন্দ কহে,—'কেনে করহ ফুত্কার?' ।
তেঁহ কহে,—"দেখ তোমার প্রভুর ব্যবহার ॥৭০॥

शिवानन्द कहे,—'केने करह फुत्कार?' ।
तेंह कहे,—"देख तोमार प्रभुर व्यवहार ॥७०॥

शिवानन्द कहे—शिवानन्द सेन ने कहा; **केने करह फुत्-कार**—आप असन्तोष क्यों व्यक्त कर रहे हो; **तेंह कहे**—उन्होंने उत्तर दिया; **देख**—देखो; **तोमार प्रभुर**—आपके स्वामी का; **व्यवहार**—व्यवहार।

अनुवाद

शिवानन्द ने नृसिंहानन्द से कहा, "आप असन्तोष क्यों व्यक्त कर रहे हो?" नृसिंहानन्द ने उत्तर दिया, "जरा अपने प्रभु श्री चैतन्य महाप्रभु का आचरण तो देखो!

তিন জনার ভোগ তেঁহো একেলা খাইলা ।
জগন্নাথ-নৃসিংহ উপবাসী হইলা" ॥৭১॥

तिन जनार भोग तेंहो एकेला खाइला ।
जगन्नाथ-नृसिंह उपवासी हइला" ॥७१॥

तिन जनार—तीनों विग्रहों के भोग; **भोग**—भोग; **तेंहो**—उन्होंने; **एकेला**—अकेले; **खाइला**—खा लिए; **जगन्नाथ-नृसिंह**—भगवान् जगन्नाथ और भगवान् नृसिंहदेव; **उपवासी हइला**—उपवास करके रह गये।

अनुवाद

"उन्होंने अकेले ही तीनों विग्रहों के भोग खा लिए। इसके कारण जगन्नाथजी तथा नृसिंहदेव दोनों भूखे रहे।"

শুনি শিবানন্দের চিত্তে হইল সংশয় ।
কিবা প্রেমাবেশে কহে, কিবা সত্য হয় ॥৭২॥

शुनि शिवानन्देर चित्ते हइल संशय ।
किबा प्रेमावेशे कहे, किबा सत्य हय ॥७२॥

शुनि—सुनकर; **शिवानन्देर**—शिवानन्द के; **चित्ते**—मन में; **हइल संशय**—कुछ संशय हुआ; **किबा**—क्या; **प्रेम-आवेशे कहे**—कुछ प्रेमभाव में कह रहे थे; **किबा**—अथवा; **सत्य हय**—यह एक सत्य था।

अनुवाद

जब शिवानन्द सेन ने यह कथन सुना, तो उन्हें सन्देह हुआ कि नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी जो कह रहे हैं, वह प्रेमाविष्ट होने के कारण कह रहे हैं या वास्तव में यह सच है।

তবে শিবানন্দে কিছু কহে ব্রহ্মচারী ।
'সামগ্রী আন নৃসিংহ লাগি পুনঃ পাক করি' ॥৭৩॥
তবে শিবানন্দে কিছু কহে ব্রহ্মচারী ।
'সামগ্রী আন নৃসিংহ লাগি পুনঃ পাক করি' ॥৭৩॥

তবে—इस पर; **शिवानन्दे**—शिवानन्द को; **किछु**—कुछ; **कहे**—कहते हैं; **ब्रह्मचारी**—नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी; **सामग्री आन**—और सामग्री लाओ; **नृसिंह लागि'**—भगवान् नृसिंहदेव के लिए; **पुनः**—दोबारा; **पाक करि'**—मुझे पकाने दो।

अनुवाद

जब शिवानन्द सेन इस तरह संशयग्रस्त थे, तो नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी ने उनसे कहा, "और भोजन-सामग्री लाओ। मुझे भगवान् नृसिंहदेव के लिए फिर से भोजन पकाने दो।"

তবে শিবানন্দ ভোগ-সামগ্রী আনিলা ।
পাক করি' নৃসিংহের ভোগ লাগাইলা ॥৭৪॥
তবে শিবানন্দ ভোগ-সামগ্রী আনিলা ।
পাক করি' নৃসিংহের ভোগ লাগাইলা ॥৭৪॥

তবে—तब; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **भोग-सामग्री**—भोजन पकाने की सामग्रियाँ; **आनिला**—ले आये; **पाक करि'**—पकाकर; **नृसिंहेर**—भगवान् नृसिंहदेव को; **भोग लागाइला**—भोग अर्पित किया।

अनुवाद

तब शिवानन्द सेन पुनः भोजन बनाने की सामग्री ले आये और प्रद्युम्न ब्रह्मचारी ने पुनः भोजन पकाया तथा नृसिंहदेव को भोजन अर्पित किया।

वर्षान्तरे शिवानन्द लञा भक्त-गण ।
नीलाचले देखे याञा प्रभुर चरण ॥७५॥

वर्षान्तरे शिवानन्द लञा भक्त-गण ।
नीलाचले देखे याञा प्रभुर चरण ॥७५॥

वर्ष-अन्तरे—अगले साल; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **लञा**—लेकर; **भक्त-गण**—सारे भक्तों को; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **देखे**—दर्शन के लिए; **याञा**—जाते हैं; **प्रभुर चरण**—महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

अगले वर्ष शिवानन्द अन्य सारे भक्तों के साथ श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों का दर्शन करने जगन्नाथ पुरी गये।

एक-दिन सभाते प्रभु बात चालाइला ।
नृसिंहानन्देर गुण कहिते लागिला ॥७६॥

एक-दिन सभाते प्रभु बात चालाइला ।
नृसिंहानन्देर गुण कहिते लागिला ॥७६॥

एक-दिन—एक दिन; **सभाते**—सभी भक्तों की उपस्थिति में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **बात चालाइला**—विषय में चर्चा उठाई (नृसिंहानन्द के घर में भोजन करने की); **नृसिंहानन्देर**—नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी के; **गुण**—दिव्य गुणों; **कहिते लागिला**—को कहना प्रारम्भ किया।

अनुवाद

एक दिन समस्त भक्तों के सामने महाप्रभु ने नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी से सम्बन्धित ये बातें चलाईं और उनके दिव्य गुणों की वे प्रशंसा करने लगे।

'गत-वर्ष पौषे मोरे कराइल भोजन ।
कभु नाहि खाइ ऐछे मिष्टान्न-व्यञ्जन' ॥७७॥

'गत-वर्ष पौषे मोरे कराइल भोजन ।
कभु नाहि खाइ ऐछे मिष्टान्न-व्यञ्जन' ॥ ७७ ॥

गत-वर्ष—पिछले साल; **पौषे**—पौष मास (दिसम्बर-जनवरी) में; **मोरे**—मुझे; **कराइल भोजन**—अनेक व्यंजन अर्पित किये थे; **कभु नाहि खाइ**—मैंने कभी नहीं आस्वादन किये; **ऐछे**—ऐसी; **मिष्टान्न**—मिठाइयाँ; **व्यञ्जन**—सब्जियाँ।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "पिछले साल पौष महीने में, जब नृसिंहानन्द ने मुझे खाने के लिए तरह-तरह की मिठाइयाँ तथा सब्जियाँ दीं, तो वे इतनी उत्तम थीं कि इसके पूर्व मैंने ऐसे व्यंजन कभी नहीं खाये थे।"

শুনি' ভক্ত-গণ মনে আশ্চর্য মানিল ।
শিবানন্দের মনে তবে প্রত্যয় জন্মিল ॥ ৭৮ ॥
শুনি' ভক্ত-গণ মনে আশ্চর্য্য মানিল ।
শিবানন্দের মনে তবে প্রত্যয় জন্মিল ॥ ৭৮ ॥

শুনি'—सुनकर; **ভক্ত-গণ**—सभी भक्त; **মনে**—मन में; **আশ্চর্য্য মানিল**—आश्चर्य अनुभव करने लगे; **শিবানন্দের**—शिवानन्द सेन के; **মনে**—मन में; **তবে**—तब; **প্রত্যয় জন্মিল**—विश्वास जाग गया।

अनुवाद

यह सुनकर सारे भक्त आश्चर्यचकित रह गये और शिवानन्द को विश्वास हो गया कि यह घटना सही थी।

এই-মত শচী-গৃহে সতত ভোজন ।
শ্রীবাসের গৃহে করেন কীর্তন-দর্শন ॥ ৭৯ ॥
এই-মত শচী-গৃহে সতত ভোজন ।
শ্রীবাসের গৃহে করেন কীর্তন-দর্শন ॥ ৭৯ ॥

এই-মত—इस प्रकार; **শচী-গৃহে**—शचीमाता के घर में; **সতত**—सदैव; **ভোজন**—भोजन करते; **শ্রীবাসের গৃহে**—श्रीवास ठाकुर के घर में; **করেন**—करते; **কীর্তন-দর্শন**—जब भी वहाँ कीर्तन होता।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु शचीमाता के मन्दिर में प्रतिदिन भोजन करते थे और श्रीवास ठाकुर के घर भी जाते थे, जब कीर्तन होता था।

নিত্যানন্দের নৃত্য দেখেন আসি' বারে বারে ।
'নিরন্তর আবির্ভাব' রাঘবের ঘরে ॥ ৮০॥

নিত্যানন্দের নৃত্য দেখেন আসি' বারে বারে ।
'নিরন্তর আবির্ভাব' রাঘবের ঘরে ॥ ৮০॥

নিত্যানন্দের নৃত্য—श्री नित्यानन्द प्रभु का नृत्य; **দেখেন**—वे देखते हैं; **আসি'**—आकर; **বারে বারে**—बारम्बार; **নিরন্তর আবির্ভাব**—निरन्तर प्राकट्य; **রাঘবের ঘরে**—राघव के घर में।

अनुवाद

इसी तरह जब नित्यानन्द प्रभु नृत्य करते थे, तब वे सदैव उपस्थित रहते थे और वे नियमित रूप से राघव के घर में प्रकट होते थे।

প্রেম-বশ গৌর-প্রভু, যাহাঁ প্রেমোত্তম ।
প্রেম-বশ হঞা তাহা দেন দরশন ॥ ৮১॥

প্রেম-বশ গৌর-প্রভু, যাহাঁ প্রেমোত্তম ।
প্রেম-বশ হঞা তাহা দেন দরশন ॥ ৮১॥

প্রেম-বশ—प्रेममयी सेवा के वशीभूत होकर; **গৌর-প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु, गौर सुन्दर; **যাহাঁ প্রেম-উত্তম**—जहाँ भी शुद्ध प्रेम हो; **প্রেম-বশ হঞা**—ऐसे प्रेम के वशीभूत होकर; **তাহা**—वहाँ; **দেন দরশন**—स्वयं प्रकट होते हैं।

अनुवाद

महाप्रभु गौरसुन्दर अपने भक्तों के प्रेम से अत्यधिक प्रभावित रहते हैं। इसलिए जहाँ भी भगवान् की शुद्ध भक्ति होती है, वहाँ महाप्रभु ऐसे प्रेम के वशीभूत होकर स्वयं प्रकट होते हैं और उनके भक्त उनका दर्शन करते हैं।

শিবানন্দের প্রেম-সীমা কে কহিতে পারে? ।
যাঁর প্রেমে বশ প্রভু আইসে বারে বারে ॥ ৮২॥

शिवानन्देर प्रेम-सीमा के कहिते पारे? ।
याँर प्रेमे वश प्रभु आइसे बारे बारे ॥ ८२ ॥

शिवानन्देर—शिवानन्द सेन के; **प्रेम-सीमा**—प्रेम की सीमा; **के**—कौन; **कहिते पारे**—अनुमान लगा सकता है; **याँर**—जिनके; **प्रेमे**—प्रेम विनिमयों द्वारा; **वश**—प्रभावित होकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आइसे**—आते हैं; **बारे बारे**—बारम्बार।

अनुवाद

शिवानन्द सेन के प्रेम व्यवहार से प्रभावित होकर श्री चैतन्य महाप्रभु बारम्बार आये। इसलिए उनके प्रेम की सीमा का अनुमान भला कौन लगा सकता है?

এই ত' কহিলু গৌরের 'আবির্ভাব' ।
ইহা যেই শুনে, জানে চৈতন্য-প্রভাব ॥ ৮৩ ॥

এइ त' कहिलु गौरेर 'आविर्भाव' ।
इहा येइ शुने, जाने चैतन्य-प्रभाव ॥ ८३ ॥

এइ त'—इस प्रकार; **कहिलु**—मैंने वर्णन किया है; **गौरेर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **आविर्भाव**—प्राकट्य; **इहा**—यह घटना; **येइ शुने**—जो कोई सुनता है; **जाने**—जान जाता है; **चैतन्य-प्रभाव**—श्री चैतन्य महाप्रभु का ऐश्वर्य।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के आविर्भाव का वर्णन किया है। जो भी इन घटनाओं के विषय में सुनता है, वह महाप्रभु के दिव्य ऐश्वर्य को समझ सकता है।

পুরুষোত্তমে প্রভু-পাশে ভগবানাচার্য ।
পরম বৈষ্ণব তেঁহো সুপণ্ডিত আর্য ॥ ৮৪ ॥

पुरुषोत्तमे प्रभु-पाशे भगवानाचार्य्य ।
परम वैष्णव तेंहो सुपण्डित आर्य्य ॥ ८४ ॥

पुरुषोत्तमे—जगन्नाथ पुरी में; **प्रभु-पाशे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के संग में; **भगवान् आचार्य्य**—भगवान् आचार्य; **परम वैष्णव**—शुद्ध भक्त; **तेंहो**—वह; **सु-पण्डित**—अत्यन्त विद्वान; **आर्य्य**—सज्जन।

अनुवाद

जगन्नाथ पुरी में श्री चैतन्य महाप्रभु की संगति में भगवान् आचार्य रहते थे, जो निश्चय ही भद्र, विद्वान तथा महान् भक्त थे।

तात्पर्य

भगवान् आचार्य के विवरण हेतु देखें *आदि-लीला* १०.१३६।

सख्य-भावाक्रान्त-चित्त, गोप-अवतार ।
स्वरूप-गोसाञि-सह सख्य-व्यवहार ॥ ८५॥

सख्य-भावाक्रान्त-चित्त, गोप-अवतार ।
स्वरूप-गोसाञि-सह सख्य-व्यवहार ॥ ८५॥

सख्य-भाव—मित्रता के प्रेम से; **आक्रान्त**—भावविभोर; **चित्त**—हृदय; **गोप-अवतार**—एक गोप बालक का अवतार; **स्वरूप-गोसाञि-सह**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी के साथ; **सख्य-व्यवहार**—मित्र जैसे आदान प्रदान।

अनुवाद

वे ईश्वर के साथ सख्य भाव में निमग्न रहते थे। वे ग्वालबाल के अवतार थे और स्वरूप दामोदर गोस्वामी के साथ उनका व्यवहार अत्यन्त मैत्रीपूर्ण था।

एकान्त-भावे आश्रियाछेन चैतन्य-चरण ।
मध्ये मध्ये प्रभुर तेँहो करेन निमन्त्रण ॥ ८६॥

एकान्त-भावे आश्रियाछेन चैतन्य-चरण ।
मध्ये मध्ये प्रभुर तेंहो करेन निमन्त्रण ॥ ८६॥

एकान्त-भावे—पूर्ण एकाग्रता के साथ; **आश्रियाछेन**—शरण ले ली है; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणों में; **मध्ये मध्ये**—कभी-कभी; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **तेंहो**—वे; **करेन**—करते; **निमन्त्रण**—निमन्त्रित।

अनुवाद

उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की पूरी तरह से शरण ले रखी थी। कभी-कभी वे महाप्रभु को अपने घर पर भोजन करने के लिए निमन्त्रित करते थे।

ঘরে ভাত করি' করেন বিবিধ ব্যঞ্জন ।
একলে গোসাঞি লঞা করান ভোজন ॥ ৮৭ ॥

घरे भात करि' करेन विविध व्यञ्जन ।
एकले गोसाञि लञा करान भोजन ॥ ८७ ॥

घरे—घर पर; **भात करि'**—भात पकाकर; **करेन**—बनाते; **विविध व्यञ्जन**—विविध प्रकार की सब्जियाँ; **एकले**—अकेले; **गोसाञि लञा**—चैतन्य महाप्रभु को लेकर; **करान भोजन**—भोजन करवाते।

अनुवाद

भगवान् आचार्य अपने घर में नाना प्रकार के चावल तथा सब्जियाँ तैयार करते और महाप्रभु को अकेले खिलाने के लिए अपने घर पर ले आते।

तात्पर्य

सामान्यतया जो लोग श्री चैतन्य महाप्रभु को भोजन पर बुलाते, वे सर्वप्रथम भगवान् जगन्नाथ को भोजन अर्पित करते और उन्हें शेष प्रसाद खिलाते थे। किन्तु भगवान् आचार्य उन्हें जगन्नाथजी के भोजन का शेष प्रसाद देने के बदले अपने घर पर ही भोजन तैयार करते। उड़ीसा में भगवान् जगन्नाथ को अर्पित किया जाने वाला भोजन *प्रसादी* कहलाता है और जो भगवान् जगन्नाथ को अर्पित नहीं किया जाता, वह *आमानी* या *घर-भात* कहलाता है।

তাঁর পিতা 'বিষয়ী' বড় শতানন্দ-খাঁন ।
'বিষয়-বিমুখ' আচার্য—'বৈরাগ্য-প্রধান' ॥ ৮৮ ॥

ताँर पिता 'विषयी' बड़ शतानन्द-खाँन ।
'विषय-विमुख' आचार्य्य—'वैराग्य-प्रधान' ॥ ८८ ॥

ताँर पिता—उनके पिता; **विषयी**—एक राजनीतिज्ञ; **बड़**—दक्ष; **शतानन्द-खाँन**—शतानन्द खान नामक; **विषय-विमुख**—राजनीति में रुचि नहीं रखते थे; **आचार्य्य**—भगवान् आचार्य; **वैराग्य-प्रधान**—वे प्रायः वैरागी ही थे।

अनुवाद

भगवान् आचार्य के पिता का नाम शतानन्द खान था, जो दक्ष

राजनीतिज्ञ थे; जबकि भगवान् आचार्य की राजप्रबन्ध में तनिक भी रुचि नहीं थी। निस्सन्देह, वे प्रायः वैरागी थे।

'गोपाल-भट्टाचार्य' नाम তাঁর ছোট-ভাই ।
কাশীতে বেদান্ত পড়ি' গেলা তাঁর ঠাঞি ॥৮৯॥

'गोपाल-भट्टाचार्य' नाम ताँर छोट-भाइ ।
काशीते वेदान्त पड़ि' गेला ताँर ठाञि ॥८९॥

गोपाल-भट्टाचार्य—गोपाल भट्टाचार्य; **नाम**—नामक; **ताँर**—उनका; **छोट-भाइ**—छोटा भाई था; **काशीते**—बनारस में; **वेदान्त पड़ि'**—वेदान्त दर्शन पढ़कर; **गेला**—गया; **ताँर ठाञि**—उसके निवासस्थान में।

अनुवाद

भगवान् आचार्य के भाई ने, जिसका नाम गोपाल भट्टाचार्य था, बनारस में वेदान्त दर्शन का अध्ययन किया था और अब वह भगवान् आचार्य के घर लौट आया था।

तात्पर्य

उन दिनों और आज़ भी, वेदान्त दर्शन को शंकराचार्य के भाष्य से, जो शारीरक भाष्य कहलाता है, समझा जाता थे। इस तरह ऐसा लगता है कि भगवान् आचार्य के छोटे भाई गोपाल भट्टाचार्य ने वेदान्त का अध्ययन शारीरिक भाष्य के माध्यम से किया था, जो निर्विशेषवादियों के मायावादी दर्शन की स्थापना करता है।

আচার্য তাহারে প্রভু-পদে মিলাইলা ।
অন্তর্যামী প্রভু চিত্তে সুখ না পাইলা ॥৯০॥

आचार्य ताहारे प्रभु-पदे मिलाइला ।
अन्तर्यामी प्रभु चित्ते सुख ना पाइला ॥९०॥

आचार्य—भगवान् आचार्य ने; **ताहारे**—उसे (अपने भाई को); **प्रभु-पदे मिलाइला**—श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलवाया; **अन्तर्यामी प्रभु**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु, जो किसी का भी हृदय जान सकते थे; **चित्ते**—अन्तर्मन में; **सुख**—प्रसन्नता; **ना पाइला**—प्राप्त नहीं कर सके।

अनुवाद

भगवान् आचार्य अपने भाई को श्री महाप्रभु से भेंट कराने ले गये, किन्तु महाप्रभु यह जानकर कि गोपाल भट्टाचार्य मायावादी दार्शनिक है, उससे मिलकर अधिक प्रसन्न नहीं हुए।

आचार्य-सम्बन्धे बाह्ये करे प्रीत्याभास ।
कृष्ण-भक्ति विना प्रभुर ना हय उल्लास ॥९१॥
आचार्य-सम्बन्धे बाह्ये करे प्रीत्याभास ।
कृष्ण-भक्ति विना प्रभुर ना हय उल्लास ॥ ९१ ॥

आचार्य-सम्बन्धे—क्योंकि वह भगवान् आचार्य से सम्बन्धित था; **बाह्ये**—बाहरी रूप से; **करे**—करते; **प्रीति-आभास**—आनन्द का प्राकट्य; **कृष्ण-भक्ति**—भगवान् कृष्ण के प्रति प्रेमभक्ति के; **विना**—बिना; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ना हय**—नहीं; **उल्लास**—आनन्दानुभूति।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को ऐसे व्यक्ति से मिलकर कोई सुख नहीं मिलता है, जो कृष्ण का शुद्ध भक्त न हो। अतएव महाप्रभु को गोपाल भट्टाचार्य से मिलकर कोई प्रसन्नता नहीं हुई, क्योंकि वह मायावादी पण्डित था। तो भी वह भगवान् आचार्य से सम्बन्धित था, अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसे देखकर बाह्य रूप से प्रसन्नता व्यक्त की।

स्वरूप गोसाञिरे आचार्य कहे आर दिने ।
'वेदान्त पड़िया गोपाल आइसाछे एखाने ॥९२॥
स्वरूप गोसाञिरे आचार्य्य कहे आर दिने ।
'वेदान्त पड़िया गोपाल आइसाछे एखाने ॥ ९२ ॥

स्वरूप गोसाञिरे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी से; **आचार्य्य**—भगवान् आचार्य; **कहे**—कहते हैं; **आर दिने**—अगले दिन; **वेदान्त पड़िया**—वेदान्त पढ़कर; **गोपाल**—गोपाल; **आइसाछे**—लौट आया है; **एखाने**—यहाँ।

अनुवाद

भगवान् आचार्य ने स्वरूप दामोदर से कहा, "मेरा छोटा भाई गोपाल वेदान्त दर्शन का अध्ययन समाप्त करके मेरे घर लौट आया है।"

সবে মেলি' আইস, শুনি 'ভাষ্য' ইহার স্থানে' ।
প্রেম-ক্রোধ করি' স্বরূপ বলয় বচনে ॥৯৩॥

सबे मेलि' आइस, शुनि 'भाष्य' इहार स्थाने' ।
प्रेम-क्रोध करि' स्वरूप बलय वचने ॥९३॥

सबे मेलि'—सब मिलकर; **आइस**—आओ; **शुनि**—हम सभी सुनते हैं; **भाष्य**—टीका; **इहार स्थाने**—उससे ही; **प्रेम-क्रोध करि'**—प्रेम के क्रोधित भाव में; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर ने; **बलय वचने**—ये वचन कहे।

अनुवाद

भगवान् आचार्य ने स्वरूप दामोदर से गोपाल से वेदान्त पर भाष्य सुनने के लिए अनुरोध किया। किन्तु स्वरूप दामोदर प्रेमवश कुछ क्रुद्ध होकर इस तरह बोले।

"বুদ্ধি ভ্রষ্ট হৈল তোমার গোপালের সঙ্গে ।
মায়াবাদ শুনিবারে উপজিল রঙ্গে ॥৯৪॥

"बुद्धि भ्रष्ट हैल तोमार गोपालेर सङ्गे ।
मायावाद शुनिबारे उपजिल रङ्गे ॥९४॥

बुद्धि—बुद्धि; **भ्रष्ट**—भ्रष्ट, दूषित; **हैल**—हो गई; **तोमार**—तुम्हारी; **गोपालेर सङ्गे**—गोपाल के संग में; **मायावाद शुनिबारे**—मायावादी टीका सुनने के लिए; **उपजिल रङ्गे**—प्रवृत्ति जागृत कर ली है।

अनुवाद

"तुमने गोपाल की संगति में अपनी बुद्धि खो दी है, अतएव तुम मायावाद दर्शन सुनने के लिए इच्छुक हो।

বৈষ্ণব হঞা যেবা শারীরক-ভাষ্য শুনে ।
সেব্য-সেবক-ভাব ছাড়ি' আপনারে 'ঈশ্বর' মানে ॥৯৫॥

वैष्णव हञा येबा शारीरक-भाष्य शुने ।
सेव्य-सेवक-भाव छाड़ि' आपनारे 'ईश्वर' माने ॥ ९५ ॥

वैष्णव हञा—एक वैष्णव होकर; **येबा**—जो कोई भी; **शारीरक-भाष्य**—मायावादी टीका, शारीरक भाष्य; **शुने**—सुनता है; **सेव्य-सेवक-भाव**—कृष्णभावनामय चेतना कि भगवान् ही स्वामी हैं और जीव उनके सेवक हैं; **छाड़ि'**—छोड़कर; **आपनारे**—स्वयं को; **ईश्वर**—परम भगवान्; **माने**—मानते हैं।

अनुवाद

"जब कोई वैष्णव *वेदान्त-सूत्र* पर शारीरक भाष्य नामक मायावादी टीका सुनता है, तो वह इस कृष्णभावनाभावित प्रवृत्ति को त्याग देता है कि भगवान् स्वामी हैं और जीव उनका सेवक है। इसके स्थान पर वह अपने आपको ही भगवान् मानने लगता है।

तात्पर्य

केवलाद्वैतवादी नामक दार्शनिक एकमात्र *शारीरक भाष्य* सुनते हैं, जोकि शंकराचार्य द्वारा रचित टीका है और वह यह पक्ष प्रस्तुत करता है कि मनुष्य को स्वयं को परमेश्वर मानना चाहिए। वेदान्त पर ऐसी मायावाद दार्शनिक टीका केवल काल्पनिक हैं, किन्तु *वेदान्त-सूत्र* पर अन्य भाष्य भी हैं। श्रील रामानुजाचार्य का भाष्य *श्री भाष्य* कहलाता है, जो *विशिष्टाद्वैतवाद* दर्शन की स्थापना करने वाला है। इसी तरह ब्रह्म सम्प्रदाय में मध्वाचार्य कृत *पूर्णप्रज्ञा भाष्य शुद्ध द्वैतवाद* की स्थापना करता है। कुमार सम्प्रदाय या निम्बार्क सम्प्रदाय में श्री निम्बार्क कृत *पारिजातसौरभ भाष्य* में *द्वैताद्वैतवाद* की स्थापना हुई है और विष्णुस्वामी सम्प्रदाय या रुद्र सम्प्रदाय में, जो शिवजी से उद्भूत है, विष्णुस्वामी ने *सर्वज्ञ भाष्य* लिखा है, जो *शुद्धाद्वैतवाद* की स्थापना करता है।

वैष्णव को *वेदान्त-सूत्र* पर इन चारों सम्प्रदायों के आचार्यों अर्थात् श्री रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, विष्णु-स्वामी तथा निम्बार्क द्वारा लिखित भाष्यों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि ये भाष्य इस दर्शन पर आधारित हैं कि भगवान् स्वामी हैं और सारे जीव उनके सनातन सेवक हैं। जो वेदान्त दर्शन के समुचित अध्ययन में रुचि रखता है, विशेषकर यदि वह वैष्णव है, तो उसे इन भाष्यों का अध्ययन करना चाहिए। इन भाष्यों की वैष्णवों द्वारा सदा से पूजा होती आई

है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती का भाष्य आदि-लीला (७.१०१) में विस्तार से दिया गया है। मायावादी भाष्य या *शारीरक भाष्य* तो वैष्णव के लिए विषतुल्य है। इसका स्पर्श तक नहीं करना चाहिए। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर की टिप्पणी है कि *महाभागवत* तक, अर्थात् जिसने भगवान् कृष्ण के चरणकमलों पर आत्मसमर्पण कर रखा है, कभी-कभी शुद्ध भक्ति से नीचे गिर जाता है यदि वह *शारीरक भाष्य* के मायावाद दर्शन को सुनता है। इसलिए सारे वैष्णवों को इस भाष्य से दूर रहना चाहिए।

महा-भागवत येई, कृष्ण प्राण-धन यार ।
मायावाद-श्रवणे चित्त अवश्य फिरे ताँर'' ॥९६॥

महा-भागवत येइ, कृष्ण प्राण-धन यार ।
मायावाद-श्रवणे चित्त अवश्य फिरे ताँर" ॥ ९६ ॥

महा-भागवत येइ—जो अत्यन्त उच्च रूप से उन्नत भक्त है; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **प्राण-धन यार**—जिसका प्राण और जीवन; **मायावाद-श्रवणे**—मायावाद दर्शन श्रवण करके; **चित्त**—हृदय; **अवश्य**—निश्चित रूप से; **फिरे**—बदल जाता है; **ताँर**—उसका।

अनुवाद

"मायावाद दर्शन ऐसा वाक्जाल प्रस्तुत करता है कि बड़े से बड़ा भक्त जिसने कृष्ण को अपना जीवन तथा आत्मा के रूप में स्वीकार कर लिया है, अपना निर्णय बदल देता है जब वह *वेदान्त-सूत्र* पर मायावाद भाष्य पढ़ता है।"

आचार्य कहे,—'आमा सवार कृष्ण-निष्ठ-चित्ते ।
आमा सवार मन भाष्य नारे फिराइते' ॥९७॥

आचार्य कहे,—'आमा सबार कृष्ण-निष्ठ-चित्ते ।
आमा सबार मन भाष्य नारे फिराइते' ॥ ९७ ॥

आचार्य कहे—भगवान् आचार्य ने उत्तर दिया; **आमा सबार**—हम सभी का; **कृष्ण-निष्ठ**—कृष्ण को समर्पित; **चित्ते**—हृदय; **आमा सबार**—हम सभी के; **मन**—मन; **भाष्य**—शारीरक भाष्य; **नारे फिराइते**—बदल नहीं सकता।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर की आपत्ति के बावजूद भगवान् आचार्य कहते रहे, "हम सभी अपने तन तथा मन से भगवान् कृष्ण के चरणकमलों पर स्थिर हैं। अतएव शारीरक भाष्य हमारे मनों को नहीं बदल सकता।"

स्वरूप कहे, "तथापि मायावाद-श्रवणे ।
'चित्, ब्रह्म, माया, मिथ्या'—एइ-मात्र शुने ॥ ९८ ॥

स्वरूप कहे, "तथापि मायावाद-श्रवणे ।
'चित्, ब्रह्म, माया, मिथ्या'—एइ-मात्र शुने ॥ ९८ ॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया; **तथापि**—फिर भी; **मायावाद-श्रवणे**—मायावादी टीका सुनकर; **चित्**—ज्ञान; **ब्रह्म**—परम सत्य; **माया**—बहिरंगा शक्ति; **मिथ्या**—मिथ्या; **एइ-मात्र**—केवल यहि; **शुने**—सुनते हैं।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया, "तो भी जब हम मायावाद दर्शन सुनते हैं, तो हम यही सुनते हैं कि ब्रह्म ज्ञान है और माया का ब्रह्माण्ड मिथ्या है, किन्तु हम कोई आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं करते।

जीवाज्ञान-कल्पित ईश्वरे, सकल-ई अज्ञान ।
याहार श्रवणे भक्तेर फाटे मन प्राण" ॥ ९९ ॥

जीवाज्ञान-कल्पित ईश्वरे, सकल-इ अज्ञान ।
याहार श्रवणे भक्तेर फाटे मन प्राण" ॥ ९९ ॥

जीव—साधारण जीव; **अज्ञान**—अज्ञान द्वारा; **कल्पित**—कल्पना किया हुआ; **ईश्वरे**—परम भगवान् में; **सकल-इ अज्ञान**—समस्त अज्ञान; **याहार श्रवणे**—जिनका श्रवण करके; **भक्तेर**—भक्त का; **फाटे**—फटता है; **मन प्राण**—मन और प्राण।

अनुवाद

"मायावादी दार्शनिक यह स्थापना करने का प्रयास करता है कि जीव मात्र काल्पनिक है और पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् माया के अधीन हैं। इस तरह की टीका सुनकर भक्त का हृदय तथा जीवन विदीर्ण हो जाता है।"

तात्पर्य

श्रील स्वरूप दामोदर गोस्वामी भगवान् आचार्य को यह बताना चाह रहे थे कि भले ही कृष्ण की भक्ति में दृढ़ होते हुए भी कोई मायावादी टीका सुनने से विचलित न हो, किन्तु फिर भी वह टीका, ज्ञान का प्रतिनिधित्व करने वाले ब्रह्म जैसे निविर्शेष शब्दों तथा भावों से भरा रहता है। मायावादियों का कहना है कि माया द्वारा उत्पन्न यह जगत् मिथ्या है और वास्तव में कोई भी जीव नहीं है, केवल एक आध्यात्मिक तेज रहता है। वे यह भी कहते हैं कि ईश्वर काल्पनिक हैं और लोग ईश्वर के बारे में अज्ञानवश ही सोचते हैं, तथा जब परब्रह्म माया द्वारा मोहित हो जाता है, तो वह जीव बनता है। अभक्तों से इन व्यर्थ के विचारों को सुनकर भक्त को अत्यन्त पीड़ा होती है, मानो उसका हृदय तथा आत्मा विदीर्ण हो चुके हों।

लज्जा-भय पाञा आचार्य मौन हइला ।
आर दिन गोपालेरे देशे पाठाइला ॥ १००॥

लज्जा-भय पाञा आचार्य्र मौन हइला ।
आर दिन गोपालेरे देशे पाठाइला ॥ १००॥

लज्जा-भय—भय तथा शर्म; **पाञा**—प्राप्त कर; **आचार्य्र**—भगवान् आचार्य; **मौन हइला**—मौन हो गये; **आर दिन**—अगले दिन; **गोपालेरे**—गोपाल भट्टाचार्य; **देशे**—अपने राज्य में; **पाठाइला**—भिजवा दिया।

अनुवाद

इस प्रकार अत्यन्त लज्जित तथा भयभीत भगवान् आचार्य मौन रहे। अगले दिन उन्होंने गोपाल भट्टाचार्य से अपने जिले में लौट जाने के लिए कहा।

एक-दिन आचार्य प्रभुरे कैला निमन्त्रण ।
घरे भात करि' करे विविध व्यञ्जन ॥१०१॥

एक-दिन आचार्य्र प्रभुरे कैला निमन्त्रण ।
घरे भात करि' करे विविध व्यञ्जन ॥ १०१॥

एक-दिन—एक दिन; **आचार्य्र**—भगवान् आचार्य; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को;

कैला निमन्त्रण—भोजन के लिए आमन्त्रित करके; **घरे**—घर पर; **भात करि'**—भात पकाकर; **करे**—तैयार करते हैं; **विविध व्यञ्जन**—अनेक प्रकार के व्यंजन।

अनुवाद

एक दिन भगवान् आचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने घर पर भोजन करने के लिए आमन्त्रित किया। इस तरह वे चावल तथा विविध प्रकार की सब्जियाँ तैयार करने लगे।

'छोट-हरिदास' नाम प्रभुर कीर्तनीया ।
ताहारे कहेन आचार्य डाकिया आनिया ॥ १०२॥

'छोट-हरिदास' नाम प्रभुर कीर्तनीया ।
ताहारे कहेन आचार्य्य डाकिया आनिया ॥ १०२॥

छोट-हरिदास नाम—छोटा हरिदास नामक एक भक्त; **प्रभुर कीर्तनीया**—श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए गीत गाने वाला; **ताहारे**—उससे; **कहेन**—कहते हैं; **आचार्य्य**—आचार्य; **डाकिया आनिया**—उसे अपने स्थान पर बुलाकर।

अनुवाद

'छोटा हरिदास' नामक एक भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए गाना गाता था। भगवान् आचार्य ने उसे अपने घर बुलाया और उससे इस प्रकार कहा।

'मोर नामे शिखि-माहितिर भगिनी-स्थाने गिया ।
शुक्ल-चाउल एक मान आनह मागिया' ॥ १०३॥

'मोर नामे शिखि-माहितिर भगिनी-स्थाने गिया ।
शुक्ल-चाउल एक मान आनह मागिया' ॥ १०३॥

मोर नामे—मेरे नाम पर; **शिखि-माहितिर**—शिखि माहिति की; **भगिनी-स्थाने**—बहन के घर; **गिया**—जाकर; **शुक्ल-चाउल**—सफेद चावल; **एक मान**—एक मान परिमाण के (लगभग एक किलो); **आनह**—कृपया ले आओ; **मागिया**—माँगकर।

अनुवाद

"तुम शिखि माहिति की बहन के पास जाओ। मेरे नाम पर उससे एक मान सफेद चावल माँगकर यहाँ ले आओ।"

तात्पर्य

भारत में *शुक्ल-चाउल* को *आतप-चाउल* या कूटने के पहले न उबाला जाने वाला चावल कहते हैं। दूसरे प्रकार का चावल *सिद्ध-चाउल* (भूरा चावल) कहलाता है, जो कूटने के पहले उबाला जाता है। सामान्यतया श्री विग्रह के लिए उत्तम कोटि के सफेद चावल की आवश्यकता पड़ती है। इस तरह भगवान् आचार्य ने छोटा हरिदास से, जो कि श्री चैतन्य महाप्रभु की सभा में गायक था, शिखि माहिति की बहन के यहाँ से यह चावल लाने के लिए कहा। *मान* उड़ीसा में चावल तथा अन्य अनाजों के लिए प्रयुक्त प्रामाणिक माप है।

माहितिर भगिनी सेइ, नाम——माधवी-देवी ।
वृद्धा तपस्विनी आर परमा वैष्णवी ॥ १०४ ॥

माहितिर भगिनी सेइ, नाम——माधवी-देवी ।
वृद्धा तपस्विनी आर परमा वैष्णवी ॥ १०४ ॥

माहितिर भगिनी—शिखि माहिति की बहन; **सेइ**—वह; **नाम**—नामक; **माधवी-देवी**—माधवी देवी; **वृद्धा**—वह वृद्ध स्त्री; **तपस्विनी**—भगवद्सेवा के नियम पालन में अति दृढ़; **आर**—और; **परमा वैष्णवी**—प्रथम कोटि की भक्तिन।

अनुवाद

शिखि माहिति की बहन का नाम माधवीदेवी था। वह वृद्धा थी जो सदैव तपस्या करती थी। वह भक्ति में बहुत उन्नत थी।

प्रभु लेखा करे यारे——राधिकार 'गण' ।
जगतेर मध्ये 'पात्र'——साड़े तिन जन ॥ १०५ ॥

प्रभु लेखा करे यारे——राधिकार 'गण' ।
जगतेर मध्ये 'पात्र'——साड़े तिन जन ॥ १०५ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लेखा करे**—स्वीकार करते हैं; **यारे**—जिसे; **राधिकार गण**—श्रीमती राधारानी की परिकरों में से एक; **जगतेर मध्ये**—सम्पूर्ण जगत् में; **पात्र**—सर्वाधिक अन्तरंग भक्त; **साड़े तिन**—तीन और आधा; **जन**—लोग।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनका श्रीमती राधारानी की एक पूर्व संगिनी के रूप में स्वीकार किया था। सारे संसार में उनके कुल साढ़े तीन घनिष्ठ भक्त थे।

स्वरूप गोसाञि, आर राय रामानन्द ।
शिखि-माहिति—तिन, ताँर भगिनी—अर्ध-जन ॥ १०६॥

स्वरूप गोसाञि, आर राय रामानन्द ।
शिखि-माहिति—तिन, ताँर भगिनी—अर्ध-जन ॥ १०६॥

स्वरूप गोसाञि—स्वरूप गोस्वामी; **आर**—तथा; **राय रामानन्द**—रामानन्द राय; **शिखि-माहिति**—शिखि माहिति; **तिन**—तीनों; **ताँर भगिनी**—उनकी बहन; **अर्ध-जन**—आधी।

अनुवाद

ये तीन भक्त थे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी, रामानन्द राय तथा शिखि माहिति और आधा व्यक्ति था शिखि माहिति की बहिन।

ताँर ठाञि तण्डुल मागि' आनिल हरिदास ।
तण्डुल देखि' आचार्यर अधिक उल्लास ॥ १०७॥

ताँर ठाञि तण्डुल मागि' आनिल हरिदास ।
तण्डुल देखि' आचार्यर अधिक उल्लास ॥ १०७॥

ताँर ठाञि—उनसे; **तण्डुल मागि'**—चावल भिक्षा माँगकर; **आनिल हरिदास**—हरिदास लाया; **तण्डुल देखि'**—चावल को देखकर; **आचार्यर**—भगवान् आचार्य को; **अधिक उल्लास**—अत्यन्त सन्तुष्टि हुई।

अनुवाद

जब छोटा हरिदास उससे चावल माँगकर भगवान् आचार्य के पास ले आया, तो वे इसकी गुणवत्ता देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

स्नेहे राञ्धिल प्रभुर प्रिय ये व्यञ्जन ।
देउल प्रसाद, आदा-चाकि, लेम्बु-सलवण ॥ १०८॥

स्नेहे रान्धिल प्रभुर प्रिय ये व्यञ्जन ।
देउल प्रसाद, आदा-चाकि, लेम्बु-सलवण ॥ १०८ ॥

स्नेहे—अत्यन्त स्नेहपूर्वक; **रान्धिल**—पकाया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **प्रिय**—प्रिय; **ये**—जो भी; **व्यञ्जन**—सब्जियाँ; **देउल प्रसाद**—जगन्नाथ के मन्दिर से प्रसाद; **आदा-चाकि**—पिसा हुआ अदरक; **लेम्बु**—नींबू; **स-लवण**—नमक के साथ।

अनुवाद

भगवान् आचार्य ने बड़े ही स्नेह के साथ तरह-तरह की सब्जियाँ तथा अन्य पकवान पकाए, जो श्री चैतन्य महाप्रभु को प्रिय थे। उन्होंने जगन्नाथजी का प्रसाद तथा पिसी सोंठ तथा नींबू और नमक जैसे पाचक-व्यंजन भी प्राप्त किये।

মধ্যাহ্নে আসিয়া প্রভু ভোজনে বসিলা ।
শাল্যন্ন দেখি' প্রভু আচার্যে পুছিলা ॥১০৯॥

मध्याह्ने आसिया प्रभु भोजने वसिला ।
शाल्यन्न देखि' प्रभु आचार्य्ये पुछिला ॥ १०९ ॥

मध्याह्ने—दोपहर के समय; **आसिया**—आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भोजने वसिला**—भोजन करने बैठ गये; **शालि-अन्न**—उत्तम श्रेणि के चावल; **देखि'**—देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **आचार्य्ये पुछिला**—भगवान् आचार्य से पूछा।

अनुवाद

दोपहर में जब श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान् आचार्य की भिक्षा पाने आये, तो उन्होंने सर्वप्रथम उत्तम चावल की प्रशंसा की और फलस्वरूप उनसे पूछा।

উত্তম অন্ন এত তণ্ডুল কাঁহাতে পাইলা? ।
আচার্য কহে,—মাধবী-পাশ মাগিয়া আনিলা ॥১১০॥

उत्तम अन्न एत तण्डुल काँहाते पाइला? ।
आचार्य्य कहे,—माधवी-पाश मागिया आनिला ॥ ११० ॥

उत्तम अन्न—अच्छा चावल; **एत**—ऐसे; **तण्डुल**—चावल; **काँहाते पाइला**—तुम्हें कहाँ

मिले; **आचार्य्य कहे**—भगवान् आचार्य ने उत्तर दिया; **माधवी-पाश**—माधवीदेवी से; **मागिया**—भिक्षा माँगकर; **आनिला**—लाया हूँ।

अनुवाद

महाप्रभु ने पूछा, "तुमने ऐसा बढ़िया चावल कहाँ से प्राप्त किया?" भगवान आचार्य ने उत्तर दिया, "मैंने माधवीदेवी से माँगकर प्राप्त किया है।"

प्रभु कहे,—'कोन् याइ' मागिया आनिल?' ।
छोट-हरिदासेर नाम आचार्य कहिल ॥ १११॥

प्रभु कहे,—'कोन् ग्राइ' मागिया आनिल?' ।
छोट-हरिदासेर नाम आचार्य्य कहिल ॥ १११॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **कोन् ग्राइ'**—कौन जाकर; **मागिया**—भिक्षा; **आनिल**—लेकर आया; **छोट-हरिदासेर**—छोटा हरिदास का; **नाम**—नाम; **आचार्य्य कहिल**—भगवान् आचार्य ने बताया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने पूछा कि चावल माँगकर कौन लाया है? तो भगवान् आचार्य ने छोटे हरिदास के नाम का उल्लेख किया।

अन्न प्रशंसिया प्रभु भोजन करिला ।
निज-गृहे आसि' गोविन्देरे आज्ञा दिला ॥ ११२॥

अन्न प्रशंसिया प्रभु भोजन करिला ।
निज-गृहे आसि' गोविन्देरे आज्ञा दिला ॥ ११२॥

अन्न प्रशंसिया—अन्न की प्रशंसा करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **भोजन करिला**—प्रसाद ग्रहण किया; **निज-गृहे**—अपने निवास पर; **आसि'**—लौटकर; **गोविन्देरे**—गोविन्द को; **आज्ञा दिला**—उन्होंने एक आदेश दिया।

अनुवाद

चावल के गुण की प्रशंसा करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्रसाद ग्रहण किया। फिर अपने निवासस्थान लौटकर उन्होंने अपने निजी सहायक गोविन्द को यह आदेश दिया।

'आजि हैते एई मोर आज्ञा पालिबा ।
छोट हरिदासे इहाँ आसिते ना दिबा' ॥ ११३ ॥

'आजि हैते एइ मोर आज्ञा पालिबा ।
छोट हरिदासे इहाँ आसिते ना दिबा' ॥ ११३ ॥

आजि हैते—आज से; **एइ**—यह; **मोर**—मेरा; **आज्ञा**—आदेश; **पालिबा**—तुम्हें पालन करना चाहिए; **छोट हरिदासे**—छोटे हरिदास को; **इहाँ**—यहाँ; **आसिते**—आने की; **ना दिबा**—अनुमति मत दो।

अनुवाद

"आज के बाद छोटे हरिदास को यहाँ मत आने देना।"

द्वार माना हैल, हरिदास दुःखी हैल मने ।
कि लागिया द्वार-माना केह नाहि जाने ॥ ११४ ॥

द्वार माना हैल, हरिदास दुःखी हैल मने ।
कि लागिया द्वार-माना केह नाहि जाने ॥ ११४ ॥

द्वार माना—प्रवेश निषेध; **हैल**—हो गया; **हरिदास**—छोटा हरिदास; **दुःखी**—अत्यन्त दुःखी; **हैल मने**—अपने मन में हो गया; **कि लागिया**—किस कारण से; **द्वार-माना**—द्वार बन्द हो गया; **केह नाहि जाने**—कोई भी नहीं जान पाया।

अनुवाद

जब छोटे हरिदास ने सुना कि उसे श्री चैतन्य महाप्रभु के पास न जाने का आदेश हुआ है, तो वह अत्यन्त दुःखी हुआ। कोई नहीं जान सका कि उसे न आने का आदेश क्यों दिया गया।

तिन-दिन हैल हरिदास करे उपवास ।
स्वरूपादि आसि, पुछिला महाप्रभुर पाश ॥ ११५ ॥

तिन-दिन हैल हरिदास करे उपवास ।
स्वरूपादि आसि, पुछिला महाप्रभुर पाश ॥ ११५ ॥

तिन-दिन हैल—तीन दिन से; **हरिदास**—छोटा हरिदास; **करे उपवास**—उपवास कर रहा था; **स्वरूप-आदि**—स्वरूप दामोदर और अन्य अन्तरंग भक्त; **आसि**—आकर; **पुछिला**—जिज्ञासा करने लगे; **महाप्रभुर पाश**—श्री चैतन्य महाप्रभु से।

अनुवाद

हरिदास ने लगातार तीन दिनों तक उपवास किया। तब स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा अन्य अन्तरंग भक्तगण श्री चैतन्य महाप्रभु के पास उनसे पूछने पहुँचे।

"कोनपराध, प्रभु, कैल हरिदास? ।
कि लागिया द्वार-माना, करे उपवास?" ॥ ११६॥

"कोनपराध, प्रभु, कैल हरिदास? ।
कि लागिया द्वार-माना, करे उपवास?" ॥ ११६॥

कोन् अपराध—कौन सा बड़ा अपराध; **प्रभु**—हे भगवान्; **कैल हरिदास**—हरिदास ने कर दिया; **कि लागिया**—किस कारण से; **द्वार-माना**—प्रवेश निषेध; **करे उपवास**—वह अब उपवास कर रहा है।

अनुवाद

"छोटे हरिदास ने कौन-सा महान् अपराध किया है? उसे आपके द्वार तक आने से मना क्यों किया गया है? अब वह तीन दिनों से उपवास कर रहा है।"

प्रभु कहे,—"वैरागी करे प्रकृति सम्भाषण ।
देखिते ना पारों आमि ताहार वदन ॥ ११७॥

प्रभु कहे,—"वैरागी करे प्रकृति सम्भाषण ।
देखिते ना पारों आमि ताहार वदन ॥ ११७॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **वैरागी**—वैरागी जीवन (आश्रम) में स्थित व्यक्ति; **करे**—करता है; **प्रकृति सम्भाषण**—एक स्त्री से अन्तरंग वार्ता; **देखिते ना पारों**—देख नहीं सकता; **आमि**—मैं; **ताहार वदन**—उसका मुँह।

अनुवाद

महाप्रभु ने उत्तर दिया, "मैं उस व्यक्ति का मुँह नहीं देख सकता, जो वैराग्य स्वीकार करने पर भी एक स्त्री से घुल-मिलकर बातें करता हो।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि वैष्णव का पहला गुण

सरलता है, जबकि कपटता या धूर्तता भक्ति के सिद्धान्तों के विरुद्ध बहुत बड़ा अपराध है। मनुष्य को चाहिए कि ज्यों-ज्यों कृष्णभावनामृत में आगे बढ़े, त्यों-त्यों वह भौतिक आसक्ति से विमुख होता जाए और इस तरह भगवान् की सेवा में अधिकाधिक अनुरक्त हो। यदि वह वास्तव में भौतिक कार्यों से विरक्त नहीं है, किन्तु तब भी अपने आपको भक्ति में उन्नत घोषित करता है, तो वह धोखा देता है। ऐसे व्यवहार को देखकर कोई भी प्रसन्न नहीं होगा।

দুর্বার ইন্দ্রিয় করে বিষয়-গ্রহণ ।
দারবী প্রকৃতি হরে মুনেরপি মন ॥ ১১৮॥

दुर्वार इन्द्रिय करे विषय-ग्रहण ।
दारवी प्रकृति हरे मुनेरपि मन ॥ ११८॥

दुर्वार—अनियन्त्रित; **इन्द्रिय**—इन्द्रियाँ; **करे**—करके; **विषय-ग्रहण**—विषय भोगों को ग्रहण; **दारवी प्रकृति**—एक स्त्री की लकड़ी से बनी मूर्ति; **हरे**—आकर्षित कर लेती है; **मुनेरपि**—एक महान् साधु को भी; **मन**—मन को।

अनुवाद

"इन्द्रियाँ अपनी भोग-वस्तुओं से इतनी दृढ़ता से आकर्षित होती हैं कि स्त्री की काठ की मूर्ति भी निश्चित रूप से बड़े से बड़े सन्त पुरुष के मन को भी आकृष्ट कर लेती है।

तात्पर्य

इन्द्रियों तथा इन्द्रिय-विषयों में ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध है कि बड़े से बड़े सन्त पुरुष का मन भी काठ की पुतली के प्रति आकृष्ट हो जाता है, यदि इसे तरुण स्त्री का आकर्षक रूप प्रदान किया गया हो। इन्द्रिय-विषय यथा रूप, ध्वनि, गन्ध, स्वाद तथा स्पर्श सदा ही आँखों, कानों, नाक, जीभ तथा त्वचा के लिए आकर्षक होते हैं। चूँकि इन्द्रियाँ तथा इन्द्रिय-विषय सहज रूप से घनिष्ठतापूर्वक सम्बन्धित हैं, इसलिए कभी-कभी इन्द्रियों पर वश रखने का दावा करने वाला व्यक्ति भी इन्द्रिय-विषयों के वशीभूत हो जाता है। इन्द्रियों को तब तक वश में करना कठिन है, जब तक वे शुद्ध न हो जाएँ तथा भगवान् की सेवा में न

लगाई जाएँ। इस तरह भले ही सन्त पुरुष अपनी इन्द्रियों को वश में करने का व्रत ले, इन्द्रियाँ फिर भी इन्द्रिय-विषयों द्वारा विचलित हो जाती हैं।

মাত্রা স্বস্রা দুহিত্রা বা না বিবিক্তাসনো ভবেৎ ।
বলবানিন্দ্রিয়-গ্রামো বিদ্বাংসমপি কর্ষতি ॥১১৯॥

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा ना विविक्तासनो भवेत् ।
बलवानिन्द्रिय-ग्रामो विद्वांसमपि कर्षति ॥ ११९ ॥

मात्रा—अपनी माता के साथ; **स्वस्रा**—अपनी बहन के साथ; **दुहित्रा**—अपनी पुत्री के साथ; **वा**—अथवा; **ना**—नहीं; **विविक्त-आसनः**—एक साथ बैठना; **भवेत्**—चाहिए; **बलवान्**—अति बलवान; **इन्द्रिय-ग्रामः**—इन्द्रियों का समूह; **विद्वांसम्**—मुक्ति के ज्ञान से युक्त व्यक्ति को ; **अपि**—भी; **कर्षति**—आकर्षित कर लेता है।

अनुवाद

"'व्यक्ति को अपनी माता, बहन या पुत्री से सटकर नहीं बैठना चाहिए, क्योंकि इन्द्रियाँ इतनी बलवान होती हैं कि वे बड़े से बड़े ज्ञानी को भी आकृष्ट कर सकती हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक *मनुसंहिता* (२.२१५) तथा *श्रीमद्भागवत* (९.१९.१७) में आया है।

ক্ষুদ্র-জীব সব মর্কট-বৈরাগ্য করিয়া ।
ইন্দ্রিয় চরাঞা বুলে 'প্রকৃতি' সম্ভাষিয়া" ॥১২০॥

क्षुद्र-जीव सब मर्कट-वैराग्य करिया ।
इन्द्रिय चराञा बुले 'प्रकृति' सम्भाषिया" ॥ १२० ॥

क्षुद्र-जीव—तुच्छ जीव; **सब**—सभी; **मर्कट वैराग्य**—एक बन्दर के समान वैरागी जीवन; **करिया**—स्वीकार करते हैं; **इन्द्रिय चराञा**—इन्द्रियों की सन्तुष्टि के लिए; **बुले**—इधर उधर भटकते हैं; **प्रकृति सम्भाषिया**—स्त्रियों से घनिष्ठ रूप से बात करते हैं।

अनुवाद

"ऐसे अनेक सम्पत्ति-रहित क्षुद्र व्यक्ति हैं, जो बन्दरों जैसा वैराग्य

स्वीकार करते हैं। वे इन्द्रियतृप्ति में लगे रहने तथा स्त्रियों से घनिष्ठतापूर्वक बातें करने के लिए इधर-उधर घूमते हैं।"

तात्पर्य

मनुष्य को अवैध यौन, मांसाहार, नशा तथा जुए के निषेध के विधि-विधानों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए और इस तरह आध्यात्मिक जीवन में प्रगति करनी चाहिए। यदि अयोग्य व्यक्ति भावनावश वैराग्य या संन्यास ग्रहण करता है, किन्तु साथ ही स्त्रियों के प्रति आसक्त रहता है, तो उसकी स्थिति बहुत खतरनाक हो जाती है। उसका वैराग्य *मर्कट-वैराग्य* कहलाता है। बन्दर जंगल में रहता है, फल खाता है और कपड़े भी नहीं पहनता। इस तरह वह एक वैरागी के समान है, किन्तु बन्दर सदैव बन्दरिया के विषय में सोचता है और कभी-कभी अपने संभोग के लिए दर्जनों बन्दरियाँ रखता है। यह *मर्कट-वैराग्य* कहलाता है। इसलिए अयोग्य व्यक्ति को वैराग्य नहीं धारण करना चाहिए। जो संन्यास ग्रहण कर लेता है, किन्तु फिर भी कामवासना से विचलित होता है और एकान्त में स्त्रियों से बातें करता है, वह *धर्मध्वजी* या *धर्म-कलंक* कहलाता है—अर्थात् वह धर्म पर कलंक लगाता है। इसलिए मनुष्य को इस सम्बन्ध में अत्यधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर *मर्कट* शब्द का अर्थ "चंचल" करते हैं। चंचल व्यक्ति स्थिर नहीं रह सकता, इसलिए वह अपनी इन्द्रियों की तृप्ति करते हुए केवल इधर-उधर भटकता है। कभी-कभी ऐसा व्यक्ति अन्यों से प्रशंसित होने के लिए अपने अनुयायियों अथवा जनता से सस्ती श्रद्धा पाने के लिए संन्यासी या बाबाजी का वेश धारण करता है, किन्तु वह इन्द्रियतृप्ति की, विशेषतया स्त्रियों की संगति की इच्छाओं को त्याग नहीं पाता। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन में प्रगति नहीं कर सकता। स्त्रियों के साथ आठ प्रकार का इन्द्रिय भोग होता है, जिनमें स्त्रियों के साथ बातें करना और उनके विषय में सोचना सम्मिलित हैं। इस तरह संन्यासी के लिए स्त्री से घुल-मिलकर बातें करना महान् अपराध है। श्री रामानन्द राय तथा श्रील नरोत्तम दास ठाकुर ने वास्तव में वैराग्य का सर्वोच्च पद प्राप्त किया था, किन्तु जो उन्हें सामान्य व्यक्ति मानकर उनकी नकल करते हैं, वे भौतिक शक्ति के वश में हो जाते हैं, क्योंकि यह एक बड़ी गलतफहमी है।

এত কহি' মহাপ্রভু অভ্যন্তরে গেলা ।
গোসাঞির আবেশ দেখি' সবে মৌন হৈলা ॥ ১২১ ॥

এত কহি' মহাপ্রভু অভ্যন্তরে গেলা ।
গোসাঞির আবেশ দেখি' সবে মৌন হৈলা ॥ ১২১ ॥

এত কহি'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अभ्यन्तरे गेला**—अपने कमरे में चले गये; **गोसाञिर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आवेश**—क्रोध में आवेश; **देखि'**—देखकर; **सबे**—सारे भक्त; **मौन हैला**—मौन हो गये।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु अपने कमरे में चले गये। उन्हें इस तरह क्रोध की मुद्रा में देखकर सारे भक्त मौन हो गये।

আর দিনে সবে মেলি' প্রভুর চরণে ।
হরিদাস লাগি, কিছু কৈলা নিবেদনে ॥ ১২২ ॥

আর দিনে সবে মেলি' প্রভুর চরণে ।
হরিদাস লাগি, কিছু কৈলা নিবেদনে ॥ ১২২ ॥

आर दिने—अगले दिन; **सबे मेलि'**—सभी भक्त एकत्रित होकर; **प्रभुर चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में; **हरिदास लागि**—छोटे हरिदास के लिए; **किछु**—कुछ; **कैला निवेदने**—निवेदन किया।

अनुवाद

अगले दिन सारे भक्त छोटे हरिदास की ओर से निवेदन करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में पहुँचे।

"অল্প অপরাধ, প্রভু করহ প্রসাদ ।
এবে শিক্ষা হইল না করিবে অপরাধ" ॥ ১২৩ ॥

"অল্প অপরাধ, প্রভু করহ প্রসাদ ।
এবে শিক্ষা হইল না করিবে অপরাধ" ॥ ১২৩ ॥

अल्प अपराध—अपराध बहुत बड़ा नहीं है; **प्रभु**—हे भगवन्; **करह प्रसाद**—कृपा कीजिये; **एबे**—अब; **शिक्षा हइल**—उसे पर्याप्त शिक्षा मिल गई है; **ना करिबे**—वह नहीं करेगा; **अपराध**—अपराध।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हरिदास ने छोटा-सा अपराध किया है, इसलिए हे प्रभु, उस पर कृपालु हों। अब उसे पर्याप्त शिक्षा मिल चुकी है। भविष्य में वह ऐसा अपराध नहीं करेगा।"

प्रभु कहे,—"मोर वश नहे मोर मन ।
प्रकृति-सम्भाषी वैरागी ना करे दर्शन ॥ १२४॥

प्रभु कहे,—"मोर वश नहे मोर मन ।
प्रकृति-सम्भाषी वैरागी ना करे दर्शन ॥ १२४॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **मोर वश**—मेरे वश में; **नहे**—नहीं है; **मोर**—मेरा; **मन**—मन; **प्रकृति-सम्भाषी**—जो स्त्री से बात करता है; **वैरागी**—संन्यास आश्रम में स्थित व्यक्ति; **ना करे दर्शन**—नहीं देखता।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मेरा मन मेरे वश में नहीं है। यह मन ऐसे व्यक्ति को संन्यास आश्रम में नहीं देखना चाहता, जो स्त्रियों से घुल-मिलकर बातें करता हो।

निज कार्ये याह सबे, छाड़ वृथा कथा ।
पुनः यदि कह आमा ना देखिबे हेथा" ॥ १२५॥

निज कार्ये याह सबे, छाड़ वृथा कथा ।
पुनः यदि कह आमा ना देखिबे हेथा" ॥ १२५॥

निज कार्ये—अपने कार्यों में; **याह सबे**—आप सभी जा सकते हैं; **छाड़**—छोड़कर; **वृथा कथा**—व्यर्थ की बातें; **पुनः**—फिर; **यदि कह**—यदि आप बोलेंगे; **आमा**—मुझे; **ना देखिबे**—आप नहीं देखेंगे; **हेथा**—यहाँ।

अनुवाद

"तुम सभी अपने-अपने कार्य पर जाओ। इस व्यर्थ की बात को छोड़ो। यदि तुम लोगों ने फिर से इस तरह बात की, तो मैं चला जाऊँगा और तुम लोग मुझे और यहाँ नहीं देख पाओगे।"

এত শুনি' সবে নিজ-কর্ণে হস্ত দিয়া ।
নিজ নিজ কার্যে সবে গেল ত' উঠিয়া ॥ ১২৬॥

এত শুনি' সবে নিজ-কর্ণে হস্ত দিয়া ।
নিজ নিজ কার্য্যে সবে গেল ত' উঠিয়া ॥ ১২৬॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **সবে**—सभी भक्त; **নিজ-কর্ণে**—अपने कानों पर; **হস্ত দিয়া**—हाथ रखकर; **নিজ নিজ কার্য্যে**—अपने अपने कार्यों में; **সবে**—वे सभी; **গেল**—चले गये; **ত'**—निश्चित रूप से; **উঠিয়া**—उठकर।

अनुवाद

यह सुनकर सारे भक्तों ने अपने हाथों से अपने कान बन्द कर लिए और उठकर वे अपने-अपने कार्यों पर चले गये।

মহাপ্রভু মধ্যাহ্ন করিতে চলি, গেলা ।
বুঝন না যায় এই মহাপ্রভুর লীলা ॥ ১২৭॥

মহাপ্রভু মধ্যাহ্ন করিতে চলি, গেলা ।
বুঝন না যায় এই মহাপ্রভুর লীলা ॥ ১২৭॥

মহাপ্রভু—श्री चैतन्य महाप्रभु; **মধ্যাহ্ন করিতে**—अपनी मध्याह्न कालीन कृत्यों को करने के लिए; **চলি**—चले; **গেলা**—गये; **বুঝন না যায়**—कोई भी समझ नहीं पाया; **এই**—यह; **মহাপ্রভুর লীলা**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीला।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी अपना दोपहर का कृत्य करने के लिए वह स्थान छोड़ दिया। कोई उनकी लीलाओं को समझ नहीं सका।

আর দিন সবে পরমানন্দ-পুরী-স্থানে ।
'প্রভুকে প্রসন্ন কর'—কৈলা নিবেদনে ॥ ১২৮॥

আর দিন সবে পরমানন্দ-পুরী-স্থানে ।
'প্রভুকে প্রসন্ন কর'—কৈলা নিবেদনে ॥ ১২৮॥

আর দিন—अगले दिन; **সবে**—सारे भक्तों ने; **পরমানন্দ-পুরী-স্থানে**—परमानन्द पुरी के स्थान पर; **প্রভুকে**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **প্রসন্ন কর**—कृपया शान्त कीजिये; **কৈলা নিবেদনে**—निवेदन करने लगे।

अनुवाद

अगले दिन सारे भक्त श्री परमानन्द पुरी के पास गये और उन्होंने उनसे प्रार्थना की कि वे महाप्रभु को शान्त करें।

তবে পুরী-গোসাঞি একা প্রভু-স্থানে আইলা ।
নমস্করি' প্রভু তাঁরে সম্ভ্রমে বসাইলা ॥১২৯॥

তবে পুরী-গোসাঞি একা প্রভু-স্থানে আইলা ।
নমস্করি' প্রভু তাঁরে সম্ভ্রমে বসাইলা ॥১২৯॥

तबे—तब; **पुरी-गोसाञि**—परमानन्द पुरी; **एका**—अकेले; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान पर; **आइला**—आये; **नमस्करि'**—प्रणाम करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उन्हें; **सम्भ्रमे**—अत्यन्त आदर के साथ; **वसाइला**—बैठाया।

अनुवाद

इसके बाद परमानन्द पुरी अकेले ही श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान पर गये। महाप्रभु ने नमस्कार करने के बाद उन्हें अपनी बगल में बड़े ही आदर से बैठाया।

পুছিলা,—কি আজ্ঞা, কেনে হৈল আগমন? ।
'হরিদাসে প্রসাদ লাগি' কৈলা নিবেদন ॥১৩০॥

পুছিলা,—কি আজ্ঞা, কেনে হৈল আগমন? ।
'হরিদাসে প্রসাদ লাগি' কৈলা নিবেদন ॥১৩০॥

पुछिला—महाप्रभु ने पूछा; **कि आज्ञा**—आपका आदेश क्या है; **केने हैल आगमन**—आप किस उद्देश्य से आये हैं; **हरिदासे प्रसाद लागि'**—छोटा हरिदास पर कृपा करने के लिए; **कैला निवेदन**—उन्होंने निवेदन किया।

अनुवाद

महाप्रभु ने पूछा, "आपका क्या आदेश है? आप यहाँ किस कार्य से आये हैं?" तब परमानन्द पुरी ने अपनी विनती निवेदित की कि महाप्रभु छोटे हरिदास पर कृपा करें।

শুনিয়া কহেন প্রভু,—"শুনহ, গোসাঞি ।
সব বৈষ্ণব লঞা তুমি রহ এই ঠাঞি ॥ ১৩১ ॥

শুনিয়া কহেন প্রভু,—"শুনহ, গোসাঞি ।
সব বৈষ্ণব লঞা তুমি রহ এই ঠাঞি ॥ ১৩১ ॥

শুনিয়া—सुनकर; **কহেন প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **শুনহ**—कृपया सुनिये; **গোসাঞি**—मेरे प्रभु; **সব বৈষ্ণব**—सभी वैष्णवों को; **লঞা**—लेकर; **তুমি**—आप; **রহ**—रहिये; **এই ঠাঞি**—इस स्थान में।

अनुवाद

यह विनती सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, कृपया आप मेरी बात सुनें। आपके लिए अच्छा होगा कि आप सारे वैष्णवों समेत यहीं रहें।

মোরে আজ্ঞা হয়, মুঞি যাঙ আলালনাথ ।
একলে রহিব তাহাঁ, গোবিন্দ-মাত্র সাথ" ॥ ১৩২ ॥

মোরে আজ্ঞা হয়, মুঞি যাঙ আলালনাথ ।
একলে রহিব তাহাঁ, গোবিন্দ-মাত্র সাথ" ॥ ১৩২ ॥

মোরে—मुझे; **আজ্ঞা হয়**—कृपया अनुमति दीजिये; **মুঞি**—मैं; **যাঙ**—जाकर; **আলালনাথ**—आलालनाथ नामक स्थान में; **একলে রহিব**—मैं अकेला रहूँगा; **তাহাঁ**—वहाँ; **গোবিন্দ-মাত্র সাথ**—केवल गोविन्द के साथ।

अनुवाद

"कृपया आप मुझे आलालनाथ जाने की अनुमति दें। मैं वहाँ अकेला रहूँगा, केवल गोविन्द मेरे साथ जायेगा।"

এত বলি' প্রভু যদি গোবিন্দে বোলাইলা ।
পুরীরে নমস্কার করি' উঠিয়া চলিলা ॥ ১৩৩ ॥

এত বলি' প্রভু যদি গোবিন্দে বোলাইলা ।
পুরীরে নমস্কার করি' উঠিয়া চলিলা ॥ ১৩৩ ॥

এত বলি'—ऐसा कहकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **যদি**—जब; **গোবিন্দে**

बोलाइला—गोविन्द को बुलाया; **पुरीरे**—परमानन्द पुरी को; **नमस्कार करि'**—प्रणाम करके; **उठिया चलिला**—उठकर जाने लगे।

अनुवाद

यह कहकर महाप्रभु ने गोविन्द को बुलाया। परमानन्द पुरी को नमस्कार करके वे उठे और जाने लगे।

आस्ते-व्यस्ते पूरी-गोसाञि प्रभु आगे गेला ।
अनूनय करि' प्रभुरे घरे बसाइला ॥ १३४॥

आस्ते-व्यस्ते पुरी-गोसाञि प्रभु आगे गेला ।
अनुनय करि' प्रभुरे घरे बसाइला ॥ १३४॥

आस्ते-व्यस्ते—अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक; **पुरी-गोसाञि**—परमानन्द पुरी; **प्रभु आगे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने; **गेला**—गये; **अनुनय करि'**—अत्यन्त विनम्रता के साथ; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **घरे**—कमरे में; **बसाइला**—बिठाया।

अनुवाद

परमानन्द पुरी अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक उनके सामने गये और अत्यन्त दीनतापूर्वक उन्हें अपने कमरे में बैठने के लिए मनाया।

"तोमार ये इच्छा, कर, स्वतन्त्र ईश्वर ।
केवा कि बलिते पारे तोमार उपरः ॥ १३५॥

"तोमार ये इच्छा, कर, स्वतन्त्र ईश्वर ।
केबा कि बलिते पारे तोमार उपर? ॥ १३५॥

तोमार ये इच्छा—आपकी जो भी इच्छा है; **कर**—आप कर सकते हैं; **स्वतन्त्र ईश्वर**—स्वतन्त्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **केबा**—कौन; **कि बलिते पारे**—बोल सकता है; **तोमार उपर**—आपके ऊपर।

अनुवाद

परमानन्द पुरी ने कहा, "हे चैतन्य महाप्रभु, आप स्वतन्त्र पुरुषोत्तम भगवान् हैं। आप जो चाहें सो कर सकते हैं। आपके ऊपर कौन कुछ कह सकता है?

লোক-হিত লাগি' তোমার সব ব্যবহার ।
আমি সব না জানি গম্ভীর হৃদয় তোমার'' ॥১৩৬॥

লোক-হিত লাগি' তোমার সব ব্যবহার ।
আমি সব না জানি গম্ভীর হৃদয় তোমার" ॥ ১৩৬ ॥

লোক-হিত লাগি'—जनसामान्य के कल्याण के लिए; **তোমার**—आपके; **সব**—सभी; **ব্যবহার**—कार्यकलाप; **আমি সব**—हम सब; **না জানি**—समझ नहीं सकते; **গম্ভীর**—अत्यन्त गम्भीर और गहन; **হৃদয়**—हृदय; **তোমার**—आपका।

अनुवाद

"आपके सारे कार्य जनसमान्य के लाभ हेतु हैं। हम उन्हें नहीं समझ सकते, क्योंकि आपके मनोभाव अत्यन्त गहरे तथा गम्भीर हैं।"

এত বলি' পুরী-গোসাঞি গেলা নিজ-স্থানে ।
হরিদাস-স্থানে গেলা সব ভক্ত-গণে ॥১৩৭॥

এত বলি' পুরী-গোসাঞি গেলা নিজ-স্থানে ।
হরিদাস-স্থানে গেলা সব ভক্ত-গণে ॥ ১৩৭ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **পুরী-গোসাঞি**—परमानन्द गोस्वामी; **গেলা**—चले गये; **নিজ-স্থানে**—अपने निवासस्थान की ओर; **হরিদাস-স্থানে**—छोटे हरिदास के निवासस्थान पर; **গেলা**—चले गये; **সব ভক্ত-গণে**—अन्य सभी भक्त।

अनुवाद

यह कहकर परमानन्द पुरी अपने घर चले गये। तब सारे भक्त छोटे हरिदास को मिलने गये।

স্বরূপ-গোসাঞি কহে,—"শুন, হরিদাস ।
সবে তোমার হিত বাঞ্ছি, করহ বিশ্বাস ॥১৩৮॥

স্বরূপ-গোসাঞি কহে,—"শুন, হরিদাস ।
সবে তোমার হিত বাঞ্ছি, করহ বিশ্বাস ॥ ১৩৮ ॥

স্বরূপ-গোসাঞি কহে—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने कहा; **শুন হরিদাস**—हरिदास, सुनो; **সবে**—हम सब; **তোমার হিত বাঞ্ছি**—तुम्हारा भला चाहते हैं; **করহ বিশ্বাস**—यह विश्वास करो।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोसांइ ने कहा, "हरिदास, हमारी बात सुनो, क्योंकि हम सब तुम्हारा भला चाहते हैं। इस पर विश्वास करो।

প্রভু হঠে পড়িয়াছে স্বতন্ত্র ঈশ্বর ।
কভু কৃপা করিবেন যাতে দয়ালু অন্তর ॥ ১৩৯॥

प्रभु हठे पड़ियाछे स्वतन्त्र ईश्वर ।
कभु कृपा करिबेन य्राते दयालु अन्तर ॥ १३९ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हठे पड़ियाछे**—अत्यन्त हठपूर्व क्रोध के भाव में; **स्वतन्त्र ईश्वर**—स्वतन्त्र परम भगवान्; **कभु**—किसी समय; **कृपा करिबेन**—वे (तुम पर) कृपा करेंगे; **य्राते**—क्योंकि; **दयालु**—दयावान; **अन्तर**—हृदय से।

अनुवाद

"इस समय श्री चैतन्य महाप्रभु रुष्ट हैं। वे स्वतन्त्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं। किन्तु कभी न कभी वे अवश्य कृपालु होंगे, क्योंकि वे हृदय से अत्यन्त दयालु हैं।

তুমি হঠ কৈলে তাঁর হঠ সে বাড়িবে ।
স্নান ভোজন কর, আপনে ক্রোধ যাবে'' ॥ ১৪০॥

तुमि हठ कैले ताँर हठ से बाड़िबे ।
स्नान भोजन कर, आपने क्रोध य्राबे" ॥ १४० ॥

तुमि हठ कैले—यदि तुम हठ करना जारी रखोगे; **ताँर**—(तो) उनका; **हठ**—हठ; **से**—वह; **बाड़िबे**—बढ़ता जायेगा; **स्नान भोजन कर**—स्नान करो और भोजन करो; **आपने क्रोध य्राबे**—उनका क्रोध स्वतः ही शान्त हो जायेगा।

अनुवाद

"महाप्रभु हठ कर रहे हैं और यदि तुम भी हठ करोगे, तो उनका हठ बढ़ेगा। तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम स्नान करो और प्रसाद पाओ। समय आने पर उनका क्रोध स्वतः दमित हो जायेगा।"

এত বলি তারে স্নান ভোজন করাঞা ।
আপন ভবন আইলা তারে আশ্বাসিয়া ॥ ১৪১ ॥

এত বলি তারে স্নান ভোজন করাঞা ।
আপন ভবন আইলা তারে আশ্বাসিয়া ॥ ১৪১ ॥

এত বলি—यह कहकर; **तारे**—उसे; **स्नान भोजन कराञा**—स्नान करने एवं प्रसाद ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया; **आपन भवन**—अपने स्थान पर; **आइला**—वापस लौट गये; **तारे आश्वासिया**—उसे आश्वासन देकर।

अनुवाद

यह कहकर स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने हरिदास को स्नान करने तथा प्रसाद लेने के लिए राजी कर लिया। इस तरह उसे आश्वस्त करके वे अपने घर लौट आये।

প্রভু যদি যান জগন্নাথ-দরশনে ।
দূরে রহি' হরিদাস করেন দর্শনে ॥ ১৪২ ॥

প্রভু যদি যান জগন্নাথ-দরশনে ।
দূরে রহি' হরিদাস করেন দর্শনে ॥ ১৪২ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यदि**—जब; **यान**—जाते; **जगन्नाथ-दरशने**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन करने; **दूरे रहि'**—दूर रहकर; **हरिदास**—छोटा हरिदास; **करेन दर्शने**—दर्शन करता।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु मन्दिर में भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने जाते, तो हरिदास दूर ही रहता और वहीं से उनका दर्शन करता।

মহাপ্রভু—কৃপা-সিন্ধু, কে পারে বুঝিতে? ।
প্রিয় ভক্তে দণ্ড করেন ধর্ম বুঝাইতে ॥ ১৪৩ ॥

মহাপ্রভু—কৃপা-সিন্ধু, কে পারে বুঝিতে? ।
প্রিয় ভক্তে দণ্ড করেন ধর্ম বুঝাইতে ॥ ১৪৩ ॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कृपा-सिन्धु**—कृपा के सागर; **के पारे बुझिते**—कौन

समझ सकता है; **प्रिय भक्ते**—अपने प्रिय भक्त को; **दण्ड करेन**—दण्डित करते हैं; **धर्म बुझाइते**—धर्म अथवा कर्तव्य के सिद्धान्त स्थापित करने के लिए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु कृपा के सागर हैं। उन्हें कौन समझ सकता है? जब वे अपने भक्तों को दण्ड देते हैं, तो वे ऐसा जान-बूझकर धर्म के सिद्धान्तों या कर्तव्य की पुनर्स्थापना करने के लिए करते हैं।

तात्पर्य

इस सन्दर्भ में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि छोटा हरिदास, कृपासिन्धु श्री चैतन्य महाप्रभु का प्रिय भक्त था, फिर भी यह स्थापित करने के लिए महाप्रभु ने उसे दण्ड दिया कि शुद्ध भक्ति में लगे व्यक्ति को पाखण्डी नहीं होना चाहिए। भक्ति में लगे संन्यासी द्वारा स्त्रियों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखना निश्चित रूप से पाखण्ड है। छोटे हरिदास को यह दण्ड उन भावी सहजियों के लिए उदाहरणरूप था, जो रूप गोस्वामी तथा अन्य प्रामाणिक संन्यासियों की नकल करके संन्यासी का वेश धारण करेंगे, किन्तु भीतर ही भीतर स्त्रियों से अवैध सम्बन्ध रख सकते हैं। ऐसे लोगों को शिक्षा देने के लिए ही श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने प्रिय भक्त हरिदास को नियमों से थोड़े-से विचलन के लिए दण्डित किया। श्रीमती माधवीदेवी अत्यन्त उच्च कोटि की भक्त थीं, इसलिए उनके पास जाकर श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए थोड़ा-सा चावल माँगना निश्चय ही बहुत बड़ा अपराध नहीं था। फिर भी भविष्य में नियमों की रक्षा करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह कठोर नियम स्थापित किया कि किसी भी संन्यासी को स्त्रियों से घनिष्ठ रूप से मिलना-जुलना नहीं चाहिए। यदि श्री चैतन्य महाप्रभु ने छोटे हरिदास को इस छोटे-से विचलन के लिए दण्ड न दिया होता, तो महाप्रभु के तथाकथित भक्त छोटे हरिदास के दृष्टान्त का लाभ उठाकर अनियन्त्रित रूप से स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध बनाने की आदत बनाये रखते। निस्सन्देह, वे अब भी प्रचार करते हैं कि वैष्णव के लिए ऐसे आचरण की अनुमति है। किन्तु इसकी बिलकुल अनुमति ही नहीं दी जाती। श्री चैतन्य महाप्रभु सारे जगत् के गुरु हैं, इसलिए उन्होंने इस उदाहरण रूप दण्ड-विधान को यह स्थापित करने के लिए लागू किया कि वैष्णव दर्शन

में अवैध सम्बन्धों की अनुमति कभी नहीं दी जाती। छोटे हरिदास को दण्ड देने के पीछे उनका यही उद्देश्य था। श्री चैतन्य महाप्रभु वास्तव में पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के सर्वाधिक दयालु अवतार हैं, किन्तु उन्होंने अवैध सम्बन्ध का कड़ाई से निषेध किया।

দেখি' ত্রাস উপজিল সব ভক্ত-গণে ।
স্বপ্নে-হ ছাড়িল সবে স্ত্রী-সম্ভাষণে ॥১৪৪॥

देखि' त्रास उपजिल सब भक्त-गणे ।
स्वप्ने-ह छाड़िल सबे स्त्री-सम्भाषणे ॥ १४४॥

देखि'—देखकर; **त्रास**—भय का वातावरण; **उपजिल**—उत्पन्न हो गया; **सब भक्त-गणे**—सारे भक्तों के बीच; **स्वप्ने-ह**—स्वप्न में भी; **छाड़िल**—छोड़ दिया; **सबे**—सब ने; **स्त्री-सम्भाषणे**—स्त्रियों से बात करना।

अनुवाद

जब सब भक्तों ने इस उदाहरण को देख लिया, तो उनके मन में भय उत्पन्न हो गया। इसलिए उन सबने स्वप्न में भी स्त्रियों से बातें करना त्याग दिया।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर *स्त्री-सम्भाषण* अर्थात् स्त्रियों से बातें करने के विषय में कहते हैं कि स्त्रियों से इन्द्रियतृप्ति के लिए मेल-जोल बढ़ाने के लिए, चाहे वह सूक्ष्म हो या स्थूल, बातें करना निषिद्ध है। महान् नैतिक शिक्षक चाणक्य पण्डित कहते हैं—*मातृवत् परदारेषु।* इस तरह न केवल संन्यासी या भक्त अपितु हर व्यक्ति को स्त्रियों से मिलने-जुलने से बचना चाहिए। मनुष्य को दूसरे की पत्नी को अपनी माता मानना चाहिए।

এই-মতে হরিদাসের এক বৎসর গেল ।
তবু মহাপ্রভুর মনে প্রসাদ নহিল ॥১৪৫॥

एइ-मते हरिदासेर एक वत्सर गेल ।
तबु महाप्रभुर मने प्रसाद नहिल ॥ १४५॥

एइ-मते—इस प्रकार; **हरिदासेर**—छोटे हरिदास का; **एक वत्सर**—एक वर्ष; **गेल**—बीत गया; **तबु**—फिर भी; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **मने**—मन में; **प्रसाद नहिल**—कृपा के कोई लक्षण नहीं दिखे।

अनुवाद

इस तरह छोटे हरिदास का पूरा एक वर्ष बीत गया, फिर भी उसके प्रति श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा का कोई नामोनिशान न था।

রাত্রি অবশেষে প্রভুরে দণ্ডবৎ হঞা ।
প্রয়াগেতে গেল কারেহ কিছু না বলিয়া ॥ ১৪৬ ॥

रात्रि अवशेषे प्रभुरे दण्डवत् हञा ।
प्रयागेते गेल कारेह किछु ना बलिया ॥ १४६ ॥

रात्रि अवशेषे—एक रात के अन्त में; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **दण्डवत् हञा**—दण्डवत् प्रणाम करके; **प्रयागेते**—प्रयाग (अलाहाबाद) नामक तीर्थ स्थल को; **गेल**—गया; **कारेह**—किसी को; **किछु**—कुछ; **ना बलिया**—बताये बिना।

अनुवाद

इस तरह एक रात के अन्त में, छोटे हरिदास ने श्री चैतन्य महाप्रभु को सादर नमस्कार करके किसी से कुछ कहे बिना ही प्रयाग के लिए प्रस्थान किया।

প্রভু-পদ-প্রাপ্তি লাগি' সঙ্কল্প করিল ।
ত্রিবেণী প্রবেশ করি' প্রাণ ছাড়িল ॥ ১৪৭ ॥

प्रभु-पद-प्राप्ति लागि' सङ्कल्प करिल ।
त्रिवेणी प्रवेश करि' प्राण छाड़िल ॥ १४७ ॥

प्रभु-पद—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल; **प्राप्ति लागि'**—प्राप्ति की इच्छा से; **सङ्कल्प करिल**—अन्ततः संकल्प किया; **त्रि-वेणी प्रवेश करि'**—प्रयाग में गंगा और यमुना के संगम के जल में प्रवेश करके; **प्राण छाड़िल**—अपने प्राण त्याग दिये।

अनुवाद

छोटे हरिदास ने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में शरण पाने के

लिए संकल्प किया। इस तरह प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम त्रिवेणी में गहरे जल में प्रवेश करके उसने अपने प्राण त्याग दिये।

সেই-ক্ষণে দিব্য-দেহে প্রভু-স্থানে আইলা ।
প্রভু-কৃপা পাঞা অন্তর্ধানেই রহিলা ॥ ১৪৮॥

सेइ-क्षणे दिव्य-देहे प्रभु-स्थाने आइला ।
प्रभु-कृपा पाञा अन्तर्धानेइ रहिला ॥ १४८॥

सेइ-क्षणे—तुरन्त उसी समय; **दिव्य-देहे**—दिव्य देह में; **प्रभु-स्थाने आइला**—श्री चैतन्य महाप्रभु के पास आया; **प्रभु-कृपा**—श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा; **पाञा**—प्राप्त कर; **अन्तर्धानेइ रहिला**—अदृश्य ही रहा।

अनुवाद

इस तरह आत्महत्या करने के तुरन्त बाद वह अपने आध्यात्मिक शरीर में श्री चैतन्य महाप्रभु के पास गया और उनकी कृपा प्राप्त की। किन्तु वह तब भी अदृश्य रहा।

গন্ধর্ব-দেহে গান করেন অন্তর্ধানে ।
রাত্র্যে প্রভুরে শুনায় গীত, অন্যে নাহি জানে ॥ ১৪৯॥

गन्धर्व-देहे गान करेन अन्तर्धाने ।
रात्र्ये प्रभुरे शुनाय गीत, अन्ये नाहि जाने ॥ १४९॥

गन्धर्व-देहे—एक गन्धर्व की देह में; **गान करेन**—वह गाता; **अन्तर्धाने**—अदृश्य रहकर; **रात्र्ये**—रात्रि के समय; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए; **शुनाय गीत**—वह गीत सुनाता; **अन्ये**—अन्य कोई भी; **नाहि जाने**—जान नहीं पाते।

अनुवाद

गन्धर्व जैसी दिव्य देह में छोटा हरिदास अदृश्य होते हुए भी रात में श्री चैतन्य महाप्रभु को गीत गाकर सुनाता था, किन्तु महाप्रभु के अतिरिक्त अन्य कोई यह नहीं जानता था।

এক-দিন মহাপ্রভু পুছিলা ভক্ত-গণে ।
'হরিদাস কাঁহা? তারে আনহ এখানে' ॥ ১৫০॥

एक-दिन महाप्रभु पुछिला भक्त-गणे ।
'हरिदास काँहा ? तारे आनह एखाने' ॥ १५० ॥

एक-दिन—एक दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **पुछिला भक्त-गणे**—भक्तों से पूछा; **हरिदास काँहा**—हरिदास कहाँ है; **तारे**—उसे; **आनह एखाने**—यहाँ लाओ।

अनुवाद

एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु ने भक्तों से पूछा, "हरिदास कहाँ है? अब तुम उसे यहाँ ला सकते हो।"

সবে কহে,—"হরিদাস বর্ষ-পূর্ণ দিনে ।
রাত্রে উঠি কাঁহা গেলা, কেহ নাহি জানে" ॥ ১৫১ ॥

सबे कहे,—"हरिदास वर्ष-पूर्ण दिने ।
रात्रे उठि काँहा गेला, केह नाहि जाने" ॥ १५१ ॥

सबे कहे—सभी ने कहा; **हरिदास**—हरिदास; **वर्ष-पूर्ण दिने**—एक वर्ष के अन्त में; **रात्रे**—रात को; **उठि**—उठकर; **काँहा गेला**—कहाँ चला गया; **केह नाहि जाने**—कोई नहीं जानता।

अनुवाद

सभी भक्तों ने उत्तर दिया, "एक वर्ष पूरा होने पर एक रात को छोटा हरिदास उठा और चला गया। कोई नहीं जानता कि वह कहाँ गया।"

শুনি' মহাপ্রভু ঈষৎ হাসিয়া রহিলা ।
সব ভক্ত-গণ মনে বিস্ময় হইলা ॥ ১৫২ ॥

शुनि' महाप्रभु ईषत् हासिया रहिला ।
सब भक्त-गण मने विस्मय हइला ॥ १५२ ॥

शुनि'—सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ईषत्**—कुछ; **हासिया रहिला**—मुस्कुराते रहे; **सब भक्त-गण**—सभी भक्त; **मने**—मनो में; **विस्मय हइला**—आश्चर्यचकित हुए।

अनुवाद

भक्तों को शोक करते हुए देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु मंद मंद मुस्कुरा रहे थे। इस तरह सारे भक्त अत्यन्त विस्मित थे।

এক-দিন জগদানন্দ, স্বরূপ, গোবিন্দ ।
কাশীশ্বর, শঙ্কর, দামোদর, মুকুন্দ ॥ ১৫৩ ॥
সমুদ্র-স্নানে গেলা সবে, শুনে কথো দূরে ।
হরিদাস গায়েন, যেন ডাকি' কণ্ঠ-স্বরে ॥ ১৫৪ ॥

एक-दिन जगदानन्द, स्वरूप, गोविन्द ।
काशीश्वर, शङ्कर, दामोदर, मुकुन्द ॥ १५३ ॥
समुद्र-स्नाने गेला सबे, शुने कथो दूरे ।
हरिदास गायेन, ग्रेन डाकि' कण्ठ-स्वरे ॥ १५४ ॥

एक-दिन—एक दिन; **जगदानन्द**—जगदानन्द; **स्वरूप**—स्वरूप; **गोविन्द**—गोविन्द; **काशीश्वर**—काशीश्वर; **शङ्कर**—शंकर; **दामोदर**—दामोदर; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **समुद्र-स्नाने**—समुद्र में स्नान करने; **गेला**—गये; **सबे**—वे सब; **शुने**—सुन सके; **कथो दूरे**—कुछ दूरी से; **हरिदास गायेन**—छोटा हरिदास गा रहा था; **ग्रेन**—जैसे; **डाकि'**—बुला रहा हो; **कण्ठ-स्वरे**—अपनी मूल आवाज में।

अनुवाद

एक दिन जगदानन्द, स्वरूप, गोविन्द, काशीश्वर, शंकर, दामोदर तथा मुकुन्द—सभी समुद्र में स्नान करने गये। वे दूर से हरिदास को गाते हुए सुन सके, मानो वह उन्हें अपनी मूल आवाज से बुला रहा हो।

মনুষ্য না দেখে—মধুর গীত-মাত্র শুনে ।
গোবিন্দাদি সবে মেলি' কৈল অনুমানে ॥ ১৫৫ ॥

मनुष्य ना देखे—मधुर गीत-मात्र शुने ।
गोविन्दादि सबे मेलि' कैल अनुमाने ॥ १५५ ॥

मनुष्य—व्यक्ति को; **ना देखे**—देख नहीं पाये; **मधुर**—अत्यन्त मधुर; **गीत**—गाना; **मात्र**—केवल; **शुने**—सुन पा रहे थे; **गोविन्द-आदि सबे**—गोविन्द आदि सभी भक्तगण; **मेलि'**—मिलकर; **कैल अनुमाने**—अनुमान करने लगे।

अनुवाद

कोई उसे देख नहीं सका, किन्तु वे सब उसे मधुर स्वर में गाते सुन सके। इसलिए गोविन्द इत्यादि सभी भक्तों ने यह अनुमान लगाया।

'विषादि खाञा हरिदास आत्म-घात कैल ।
सेई पापे जानि 'ब्रह्म-राक्षस' हैल ॥ १५६॥

'विषादि खाञा हरिदास आत्म-घात कैल ।
सेइ पापे जानि 'ब्रह्म-राक्षस' हैल ॥ १५६॥

विष-आदि खाञा—विष पीकर; **हरिदास**—छोटे हरिदास ने; **आत्म-घात कैल**—आत्महत्या कर ली; **सेइ पापे**—उस पापकृत्य के कारण; **जानि**—हम समझते हैं; **ब्रह्म-राक्षस**—एक ब्रह्म राक्षस; **हैल**—वह बन गया है।

अनुवाद

"हरिदास ने विष पीकर आत्महत्या कर ली होगी और इस पापकर्म के कारण ही अब वह ब्रह्म-राक्षस बन गया है।

आकार ना देखि, मात्र शुनि तार गान' ।
स्वरूप कहेन,—"एई मिथ्या अनुमान ॥ १५७॥

आकार ना देखि, मात्र शुनि तार गान' ।
स्वरूप कहेन,—"एइ मिथ्या अनुमान ॥ १५७॥

आकार—रूप; **ना देखि**—हम नहीं देख सकते; **मात्र**—केवल; **शुनि**—हम सुन रहे हैं; **तार**—उसका; **गान**—गायन; **स्वरूप कहेन**—स्वरूप दामोदर ने कहा; **एइ**—यह; **मिथ्या**—गलत; **अनुमान**—अनुमान है।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हम उसका भौतिक रूप नहीं देख पा रहे हैं, किन्तु फिर भी उसका मधुर गाना सुन रहे हैं। अतएव वह प्रेत बन गया होगा।" किन्तु स्वरूप दामोदर ने आपत्ति की, "यह झूठा अनुमान है।

आजन्म कृष्ण-कीर्तन, प्रभुर सेवन ।
प्रभु-कृपा-पात्र, आर क्षेत्रेर मरण ॥ १५८॥

आजन्म कृष्ण-कीर्तन, प्रभुर सेवन ।
प्रभु-कृपा-पात्र, आर क्षेत्रेर मरण ॥ १५८॥

आजन्म—सम्पूर्ण जीवन; **कृष्ण-कीर्तन**—हरे कृष्ण महामन्त्र का जप; **प्रभुर सेवन**—

श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवा; **प्रभु-कृपा-पात्र**—महाप्रभु को अति प्रिय; **आर**—और; **क्षेत्रेर मरण**—तीर्थस्थान में उसका देहान्त।

अनुवाद

"छोटे हरिदास ने आजीवन हरे कृष्ण मन्त्र का जप किया और परम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवा की। इतना ही नहीं, वह महाप्रभु को अत्यन्त प्रिय था और उसका तीर्थस्थान में देहान्त हुआ है।

দুর্গতি না হয় তার, সদগতি সে হয় ।
প্রভু-ভঙ্গী এই, পাছে জানিবা নিশ্চয়'' ॥১৫৯॥

दुर्गति ना हय तार, सद्गति से हय ।
प्रभु-भङ्गी एइ, पाछे जानिबा निश्चय" ॥ १५९ ॥

दुर्गति—बुरा परिणाम; **ना हय तार**—उसका नहीं हुआ है; **सत्-गति से हय**—उसे मुक्ति मिल गई होगी; **प्रभु-भङ्गी**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीला है; **एइ**—यह; **पाछे**—बाद में; **जानिबा**—आपको समझ आयेगा; **निश्चय**—वास्तविक हकीकत।

अनुवाद

"हरिदास का पतन नहीं हुआ होगा। उसे अवश्य ही मुक्ति मिली होगी। यह तो श्री चैतन्य महाप्रभु की लीला है। इसे तुम सब बाद में समझोगे।"

প্রয়াগ হইতে এক বৈষ্ণব নবদ্বীপ আইল ।
হরিদাসের বার্তা তেঁহো সবারে কহিল ॥১৬০॥

प्रयाग हइते एक वैष्णव नवद्वीप आइल ।
हरिदासेर वार्ता तेंहो सबारे कहिल ॥ १६० ॥

प्रयाग हइते—प्रयाग से; **एक**—एक; **वैष्णव**—भगवान् कृष्ण का भक्त; **नवद्वीप आइल**—नवद्वीप आया; **हरिदासेर वार्ता**—हरिदास का समाचार; **तेंहो**—उसने; **सबारे कहिल**—सभी को बताया।

अनुवाद

एक भक्त प्रयाग से नवद्वीप लौटा और उसने हर एक को छोटे हरिदास की आत्महत्या का विस्तृत विवरण दिया।

যৈছে সঙ্কল্প, যৈছে ত্রিবেণী প্রবেশিল ।
শুনি', শ্রীবাসাদির মনে বিস্ময় হইল ॥১৬১॥

য়ৈছে সঙ্কল্প, য়ৈছে ত্রিবেণী প্রবেশিল ।
শুনি', শ্রীবাসাদির মনে বিস্ময় হ-ল ॥ १६१ ॥

য়ৈছে সঙ্কল্প—किस प्रकार उसने संकल्प लिया; **য়ৈছে**—किस प्रकार; **ত্রিবেণী প্রবেশিল**—उसने त्रिवेणी में प्रवेश किया; **শুনি'**—सुनकर; **শ্রীবাস-আদির**—श्रीवास ठाकुर और दूसरों के; **মনে**—मनों में; **বিস্ময় হইল**—आश्चर्य हुआ।

अनुवाद

उसने बताया कि किस तरह हरिदास ने संकल्प किया और फिर वह गंगा-यमुना के संगम में जल में प्रविष्ट हुआ। ये बातें विस्तार से सुनकर श्रीवास ठाकुर तथा अन्य भक्त अत्यधिक चकित हुए।

বর্ষান্তরে শিবানন্দ সব ভক্ত লঞা ।
প্রভুরে মিলিলা আসি' আনন্দিত হঞা ॥১৬২॥

বর্ষান্তরে শিবানন্দ সব ভক্ত লঞা ।
প্রভুরে মিলিলা আসি' আনন্দিত হঞা ॥ १६२ ॥

বর্ষ-অন্তরে—वर्ष के अन्त में; **শিবানন্দ**—शिवानन्द सेन; **সব**—सब; **ভক্ত লঞা**—भक्तों को लेकर; **প্রভুরে মিলিলা**—श्री चैतन्य महाप्रभु से मिले; **আসি'**—आकर; **আনন্দিত হঞা**—अत्यन्त आनन्दित होकर।

अनुवाद

वर्ष के अन्त में शिवानन्द सेन पहले की तरह अन्य भक्तों के साथ जगन्नाथ पुरी आये और परम सुख का अनुभव करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु से मिले।

'হরিদাস কাঁহা?' যদি শ্রীবাস পুছিলা ।
''স্ব-কর্ম-ফল-ভুক্পুমান্''—প্রভু উত্তর দিলা ॥১৬৩॥

'হরিদাস কাঁহা?' য়দি শ্রীবাস পুছিলা ।
"স্ব-কর্ম-ফল-ভুক্পুমান্"—প্রভু উত্তর দিলা ॥ १६३ ॥

हरिदास काँहा—छोटा हरिदास कहाँ है; **ग्रदि**—जब; **श्रीवास पुछिला**—श्रीवास ठाकुर ने पूछा; **स्व-कर्म-फल-भुक्**—अपने कर्मों का प्रतिफल भोगना निश्चित है; **पुमान्**—व्यक्ति को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **उत्तर दिला**—उत्तर दिया।

अनुवाद

जब श्रीवास ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु से पूछा, "छोटा हरिदास कहाँ है?" तो महाप्रभु ने उत्तर दिया, "मनुष्य को अपने सकाम कर्मों का फल अवश्य मिलता है।"

তবে শ্রীবাস তার বৃত্তান্ত কহিল ।
যৈছে সঙ্কল্প, যৈছে ত্রিবেণী প্রবেশিল ॥১৬৪॥

तबे श्रीवास तार वृत्तान्त कहिल ।
ग्रैछे सङ्कल्प, ग्रैछे त्रिवेणी प्रवेशिल ॥१६४॥

तबे—उस समय; **श्रीवास**—श्रीवास ठाकुर ने; **तार**—छोटा हरिदास का; **वृत्तान्त**—वृतान्त; **कहिल**—कहा; **ग्रैछे**—किस प्रकार; **सङ्कल्प**—उसने निश्चय किया; **ग्रैछे**—किस प्रकार; **त्रिवेणी प्रवेशिल**—वह गंगा और यमुना के मिलन स्थान पर जल में प्रवेश कर गया।

अनुवाद

तब श्रीवास ठाकुर ने हरिदास के निर्णय तथा गंगा-यमुना के संगम में उसके जल में प्रवेश करने का विस्तार से वर्णन किया।

শুনি' প্রভু হাসি' কহে সুপ্রসন্ন চিত্ত ।
'প্রকৃতি দর্শন কৈলে এই প্রায়শ্চিত্ত' ॥১৬৫॥

शुनि' प्रभु हासि' कहे सुप्रसन्न चित्त ।
'प्रकृति दर्शन कैले एइ प्रायश्चित्त' ॥१६५॥

शुनि'—सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हासि'**—हँसकर; **कहे**—उत्तर दिया; **सु-प्रसन्न चित्त**—प्रसन्न चित्त से; **प्रकृति दर्शन कैले**—यदि कोई इन्द्रिय भोग भावना से स्त्रियों को देखता है; **एइ प्रायश्चित्त**—यही प्रायश्चित्त है।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने विस्तारपूर्वक बातें सुनीं, तो वे प्रसन्न मुद्रा

में हँसे और बोले, "यदि कोई स्त्रियों को वासनापूर्ण दृष्टि से देखता है, तो प्रायश्चित्त की यही एकमात्र विधि है।"

স্বরূপাদি মিলি' তবে বিচার করিলা ।
ত্রিবেণী-প্রভাবে হরিদাস প্রভু-পদ পাইলা ॥ ১৬৬॥

स्वरूपादि मिलि' तबे विचार करिला ।
त्रिवेणी-प्रभावे हरिदास प्रभु-पद पाइला ॥ १६६ ॥

स्वरूप-आदि—स्वरूप दामोदर आदि भक्तों ने; **मिलि'**—मिलकर; **तबे**—तब; **विचार करिला**—विचार किया; **त्रिवेणी-प्रभावे**—गंगा और यमुना के संगम के पवित्र स्थान के प्रभाव से; **हरिदास**—छोटे हरिदास ने; **प्रभु-पद पाइला**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल प्राप्त कर लिये।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि सारे भक्तों ने यह निष्कर्ष निकाला कि चूँकि हरिदास ने गंगा तथा यमुना नदियों के संगम पर आत्महत्या की है, अतः उसे अन्ततोगत्वा श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण प्राप्त हुई होगी।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर की टिप्पणी है कि संन्यास धारण करने और संन्यासी या बाबाजी का वेश धारण करने के बाद यदि कोई अपने मन में इन्द्रियतृप्ति का भाव, विशेषतया स्त्री से सम्बन्ध करने का विचार लाता है, तो उसका एकमात्र प्रायश्चित्त गंगा-यमुना के संगम पर आत्महत्या करना है। केवल ऐसे प्रायश्चित्त से ही उसका पापी जीवन शुद्ध हो सकता है। यदि ऐसा व्यक्ति इस तरह दण्डित होता है, तो वह श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण पा सकता है। किन्तु ऐसे दण्ड के बिना श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण पुनः प्राप्त कर पाना बहुत कठिन है।

এই-মত লীলা করে শচীর নন্দন ।
যাহা শুনি' ভক্ত-গণের যুড়ায় কর্ণ-মন ॥ ১৬৭॥

एइ-मत लीला करे शचीर नन्दन ।
ग्राहा शुनि' भक्त-गणेर ग्रुड़ाय कर्ण-मन ॥ १६७॥

एइ-मत—इस प्रकार; **लीला करे**—निरन्तर लीलाएँ करते हैं; **शचीर नन्दन**—माता शची के पुत्र; **ग्राहा शुनि'**—जिन्हें सुनकर; **भक्त-गणेर**—भक्तों के; **ग्रुड़ाय**—सन्तुष्ट होते हैं; **कर्ण-मन**—कान और मन।

अनुवाद

इस तरह शचीनन्दन श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी लीलाएँ करते हैं, जो कि शुद्ध भक्तों के कर्णों और मनों को महान् सन्तोष देती हैं।

আপন কারুণ্য, লোকে বৈরাগ্য-শিক্ষণ ।
স্ব-ভক্তের গাঢ়-অনুরাগ-প্রকটী-করণ ॥ ১৬৮॥

आपन कारुण्य, लोके वैराग्य-शिक्षण ।
स्व-भक्तेर गाढ़-अनुराग-प्रकटी-करण ॥ १६८॥

आपन—अपनी; **कारुण्य**—करुणा; **लोके**—जनसाधारण के लिए; **वैराग्य-शिक्षण**—संन्यास आश्रम के विषय में शिक्षा देते; **स्व-भक्तेर**—अपने भक्तों की ; **गाढ़**—गहरी; **अनुराग**—आसक्ति; **प्रकटी**—प्रकट; **करण**—करवाते हैं।

अनुवाद

यह घटना श्री चैतन्य महाप्रभु की करुणा, उनकी यह शिक्षा कि संन्यासी को अपने संन्यास आश्रम में ही रहना चाहिए तथा उनके श्रद्धालु भक्तों द्वारा उनके प्रति अनुभव किये जाने वाले अगाध अनुराग को प्रकट करती है।

তীর্থের মহিমা, নিজ ভক্তে আত্মসাৎ ।
এক লীলায় করেন প্রভু কার্য পাঁচ-সাত ॥ ১৬৯॥

तीर्थेर महिमा, निज भक्ते आत्मसात् ।
एक लीलाय करेन प्रभु कार्य्य पाँच-सात ॥ १६९॥

तीर्थेर महिमा—तीर्थ स्थान की महिमा; **निज भक्ते आत्मसात्**—अपने भक्त को पुन: स्वीकार करना; **एक लीलाय**—एक लीला द्वारा; **करेन**—करते हैं; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कार्य्य पाँच-सात**—पाँच से सात विभिन्न उद्देश्य की पूर्ति।

अनुवाद

यह तीर्थस्थानों की महिमा को भी प्रदर्शित करती है तथा दिखलाती है कि किस तरह महाप्रभु अपने श्रद्धालु भक्त को स्वीकार करते हैं। इस तरह महाप्रभु ने एक लीला करके पाँच-सात उद्देश्यों को पूरा किया।

मधुर चैतन्य-लीला—समुद्र-गम्भीर ।
लोके नाहि बुझे, बुझे येइ 'भक्त' 'धीर' ॥ १७० ॥

मधुर चैतन्य-लीला—समुद्र-गम्भीर ।
लोके नाहि बुझे, बुझे येइ 'भक्त' 'धीर' ॥ १७० ॥

मधुर—मधुर; **चैतन्य-लीला**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **समुद्र-गम्भीर**—समुद्र के समान गम्भीर; **लोके नाहि बुझे**—सामान्य लोग नहीं समझ सकते; **बुझे**—समझ सकता है; **येइ**—जो; **भक्त**—भक्त; **धीर**—धीर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ अमृत तुल्य हैं और समुद्र के समान गहरी हैं। सामान्य लोग उन्हें नहीं समझ सकते, किन्तु धीर भक्त इन्हें समझ सकता है।

विश्वास करिया शुन चैतन्य-चरित ।
तर्क ना करिह, तर्के हबे विपरीत ॥ १७१ ॥

विश्वास करिया शुन चैतन्य-चरित ।
तर्क ना करिह, तर्के हबे विपरीत ॥ १७१ ॥

विश्वास करिया—श्रद्धा और निश्चय के साथ; **शुन**—सुनो; **चैतन्य-चरित**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ; **तर्क ना करिह**—व्यर्थ के तर्क मत करो; **तर्के**—तर्क द्वारा; **हबे विपरीत**—विपरीत फल प्राप्त होगा।

अनुवाद

कृपया श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं को श्रद्धा तथा विश्वासपूर्वक सुनिये। तर्क मत कीजिये, क्योंकि तर्क से विपरीत फल प्राप्त होगा।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १७२॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्रार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १७२॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों में; **ग्रार**—जिसकी; **आश**—आशा है; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णित करते हैं; **कृष्ण-दास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए मैं कृष्णदास उनके पदचिह्नों पर चलकर श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस अध्याय की शिक्षाएँ

इस अध्याय का सारांश देते हुए श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि इससे निम्नलिखित शिक्षाएँ प्राप्त करनी चाहिए : (१) यद्यपि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु कृपा के अवतार हैं, किन्तु उन्होंने अपने निजी संगियों में से एक, यथा छोटे हरिदास की संगति त्याग दी, क्योंकि यदि वे ऐसा न करते तो छद्म भक्त, भक्तों के रूप में रहने तथा साथ ही साथ अवैध यौन सम्बन्ध रखने के लिए छोटा हरिदास के दोष का लाभ उठाते। ऐसे कार्यों से श्री चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय का नैतिक पतन होता और इस तरह भक्तगण श्री चैतन्य महाप्रभु के नाम पर नारकीय जीवन में चले जाते।

(२) छोटे हरिदास को दण्ड देकर महाप्रभु ने आचार्यों या चैतन्य सम्प्रदाय का प्रसार करने वाली संस्थाओं के मुखियाओं तथा समस्त भक्तों के लिए आदर्श स्थापित किया। श्री चैतन्य महाप्रभु सर्वोच्च आदर्श बनाये रखना चाहते थे।

(३) श्री चैतन्य महाप्रभु ने शिक्षा दी कि शुद्ध भक्त सरल हों तथा पापकर्मों से रहित हों, क्योंकि तभी कोई उनका प्रामाणिक दास हो सकता है। श्री चैतन्य

महाप्रभु ने अपने अनुयायियों को शिक्षा दी कि किस तरह संन्यास आश्रम का दृढ़ता से पालन किया जाए।

(४) श्री चैतन्य महाप्रभु यह बताना चाहते थे कि उनके भक्त उन्नत हैं तथा उनका चरित्र आदर्श है। वे अपने श्रद्धालु भक्तों को कृपापूर्वक स्वीकार करते हैं और उन्हें शिक्षा देते हैं कि भक्ति के कठोर नियमों से थोड़ा-सा भी विचलित होने से कितना कष्ट तथा उत्पात उत्पन्न हो सकता है।

(५) छोटे हरिदास को दण्ड देकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस पर कृपा प्रदर्शित की और इस तरह प्रदर्शित किया कि उनके प्रति हरिदास की भक्ति कितनी उच्च थी। इसी दिव्य सम्बन्ध के कारण उन्होंने अपने शुद्ध भक्त के तुच्छ अपराध को भी सुधारा। इसलिए जो कोई श्री चैतन्य महाप्रभु का शुद्ध भक्त बनना चाहता है, उसे समस्त भौतिक इन्द्रियतृप्ति का परित्याग कर देना चाहिए, अन्यथा श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों को प्राप्त कर पाना दुष्कर होगा।

(६) यदि कोई प्रयाग, मथुरा अथवा वृन्दावन जैसे सुविख्यात तीर्थस्थान में शरीर त्यागता है, तो वह अपने पापकर्म के फलों से छुटकारा पा लेता है और तब पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की शरण प्राप्त करता है।

(७) यद्यपि शुद्ध भक्त का पतन हो सकता है, फिर भी महाप्रभु की कृपा से उसे भगवद्धाम लौट जाने का अवसर प्राप्त होता है।

इस प्रकार श्री चैतन्य-चरितामृत के अन्त्य-लीला के अन्तर्गत छोटे हरिदास को दण्ड शीर्षक वाले द्वितीय अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ ।